



जैन साहित्य एवं मंदिर उपकरण

हमारे यहाँ सभी प्रकार का दिगंबर जैन एवं भारत के सभी प्रमुख धार्मिक संस्थानों का सत साहित्य एवं मंदिर में उपयोग हेतु उपकरण और प्रभावना में बाटने योग्य सामग्री सीमित मूल्य पर उपलब्ध है

ॐ



(पांडुशिला, सिंघासन, छत्र, चवर प्रातिहार्य, जाप माला, मंगल कलश, पूजा बर्तन, चंदोवा, तोरण, झारी,

(शुद्ध चांदी के उपकरण आर्डर पर निर्मित किया जाता है)



नोट:- हमारे यहाँ घरों में उपयोग हेतु, साधुओं के उपयोग हेतु, अनुष्ठानों में उपयोग हेतु शुद्ध घी भी आर्डर पर उपलब्ध कराया जाता है



SOURABH KUMAR JAIN

9993602663

77229 83010

SOURABHJN1989@GMAIL.COM

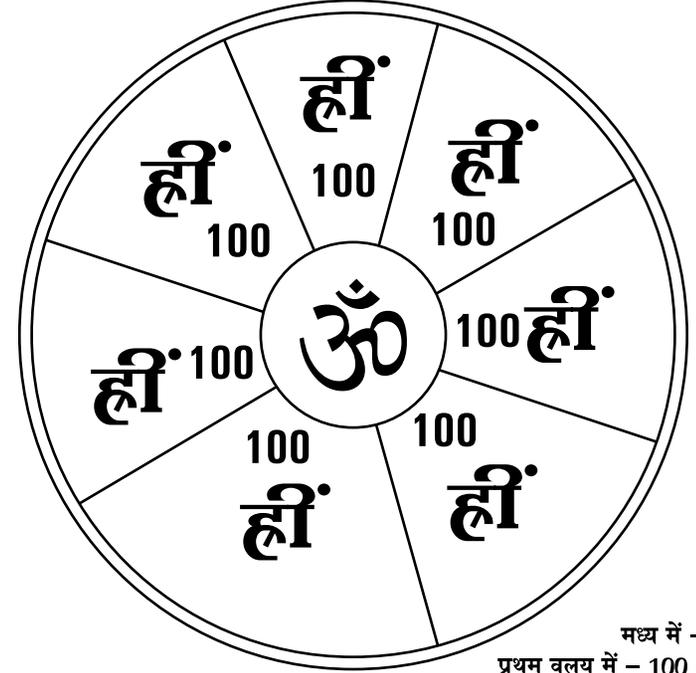


ॐ श्री वीतरागाय नमः ॐ

विशद

श्री रक्षाबन्धन विधान

माण्डला



मध्य में - ॐ
प्रथम वलय में - 100 अर्घ्य
द्वितीय वलय में - 100 अर्घ्य
तृतीय वलय में - 100 अर्घ्य
चतुर्थ वलय में - 100 अर्घ्य
पंचम वलय में - 100 अर्घ्य
षष्ठम् वलय में - 100 अर्घ्य
सप्तम् वलय में - 100 अर्घ्य
कुल 700 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

कृति : विशद श्री रक्षाबन्धन विधान
 कृतिकार : प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
 आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
 संस्करण : प्रथम-2018 प्रतियाँ : 1000
 संकलन : मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
 सहयोगी : आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी
 ऐलक श्री विदक्ष सागर जी महाराज
 क्षुल्लक श्री विसोमसागरजी महाराज
 क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी
 संपादन : ब्र. ज्योति दीदी 9829076085
 ब्र. आस्था दीदी 9660996425,
 ब्र. सपना दीदी 9829127533
 संयोजन : ब्र. सोनू दीदी, ब्र. आरती दीदी
 कम्पोजिंग : ब्र. आरती दीदी 8700876822
 प्राप्ति स्थल : 1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, 9413336017
 2. विशद साधना केन्द्र नैनवा, 9214408656
 3. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी 09416888879
 4. विशद साहित्य केन्द्र, हरीश जैन, दिल्ली
 मो. 09818115971, 09136248971
 मूल्य : 35/- रु. मात्र

मुद्रक : पारस प्रकाशन, दिल्ली. मो.: 9811374961, 9811363613
 ईमेल : pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com

अर्चन के सुमन

संसार दुःखों का समूह है। दुःखों से बचने के लिए प्राणी हमेषा प्रयत्नशील रहता है। यह प्रयत्न कभी अनुकूल तो कभी प्रतिकूल होते हैं। अनुकूल अर्थात् सम्यक् प्रयत्न ही दुःख दूर करने में समर्थ होते हैं। दुःखों का अंतरंगकारण हमारी राग-द्वेष रूप परिणति है एवं बाह्य कारण कर्मोदय है। कर्मोदय के अनुसार अनुकूल-प्रतिकूल निमित्त मिलते रहते हैं और जीव दुःख का वेदन करता रहता है इसलिए कवि ने लिखा है-

संसार में सुख सर्वदा काहूँ को न दीखे।
 कोई तन दुखी, कोई मन दुखी, कोई धन दुखी दीखे॥

ऐसी स्थिति में लोगों को जिनधर्म से जुड़कर देव-शास्त्र-गुरु की पूजा, आराधना ही सर्वोपरि है। पुण्य संचय हो और इंसान सुखी और समृद्ध हो एवं सम्यक्त्व को प्राप्त कर परम्परा से रत्नत्रय का आराधन कर मोक्ष प्राप्त कर सके। इस हेतु चिंतन के बिखरे पुष्पों को समेटकर चित्त को चौतन्यता की ओर ले जाने के लिए ज्ञानवारिधि गुरुवर श्री विशदसागर जी महाराज ने 'विशद रक्षाबन्धन महामण्डल विधान' के माध्यम से षड् पुंजों को सरल भाषा में संचित किया है। क्योंकि कहते हैं कि-

प्रभु भक्ति से नूर मिलता है।
 गमे दिल को सरूर मिलता है॥
 जो आता है सच्चे मन से द्वार पर।
 उसे कुछ न कुछ जरूर मिलता है॥

आचार्य श्री की तपस्तेज सम्पन्न एवं प्रसन्न मुखमुद्रा प्रायः सभी का मन मोह लेती है। आचार्य श्री के कण्ठ में साक्षात् सरस्वती का निवास है। इसे भगवान का वरदान कहें या पूर्व पुण्योदय समझ में

नहीं आता। आचार्य श्री को पाकर सारी जैन समाज गौरवान्वित है। आचार्य श्री के द्वारा अब तक 185 विधानों की रचना की जा चुकी है। आचार्य श्री का गुणगान करना तो कदाचित् संभव ही नहीं है। गुरुवर के चरणों में अंतिम यही भावना है कि-

जिनका दर्शन भवि जीवों में, सत् श्रद्धान जगाता हैं।
उपदेशामृत जिनका जग में, सद्धर्म की राह दिखाता है॥
उन विशद सिन्धु के श्री चरणों में, सादर शीष झुकाते हैं।
हम चले आपके कदमों पर, यह विशद भावना भाते हैं॥

-ब्र. आरती दीदी

(संघस्थ आ. विशदसागर जी महाराज)

रक्षाबन्धन कथा

(वात्सल्य का पर्व)

-साहित्यरत्नाकर आचार्य श्री विशदसागर जी

आज का पर्व सन्तों के ऊपर वात्सल्य भाव का पर्व है। 'आज का यह पर्व मुक्ति पर्व है, हरीतिमा का पर्व है, धर्मरक्षा का पर्व है, खुशहाली का पर्व है, भाईचारे का पर्व है, सौहार्द्र का पर्व है, मानमर्दन का पर्व है, रक्षा की शिक्षा का पर्व है, प्रकाश का प्रेरक पर्व है। जोड़ने वाला पर्व है, वात्सल्य, स्नेह, प्रेम का पर्व है।

इस पर्व का प्रारंभ भगवान वासुपूज्य के समय से हुआ। संसार के अन्दर उतार-चढ़ाव होते हैं। विष्णुकुमार मुनि का नाम सभी जानते हैं। आपने कई बार कथा पढ़ी होगी। उज्जैन नगर में श्रीवर्मा नामक राजा राज्य करता था। उसके चार मंत्री बलि, प्रह्लाद, नमुचि, बृहस्पति थे। चारों मंत्री राजा के नजदीकी थे, मंत्री बहुत विद्वान् थे। किन्तु सबसे बड़ी कमी थी कि वह जिनधर्म से हीन थे और अहंकारी थे।

अकंपनाचार्य 700 मुनियों सहित उज्जैनी नगर में पधरे। अकंपनाचार्य मुनिराज निमित्त ज्ञानी थे। उन्होंने किसी निमित्त को देखकर अपने ज्ञान से जान लिया कि कुछ अशुभ होने वाला है। इसलिए अकंपनाचार्य ने समस्त संघ को आदेश दिया कि राजादिक के आने पर किसी के साथ वार्तालाप न किया जावे अन्यथा अनर्थ हो जाएगा। समस्त संघ का विनाश हो जाएगा और सभी को मौन रहने का आदेश दिया। श्रुतसागर मुनि लघुषंका की बाध आने से बाहर गये थे। श्रुतसागर मुनि आदेश नहीं सुन पाए थे। राजा श्रीवर्मा ने जाकर देखा, पूरा का पूरा संघ मौन है, नमोस्तु किया, आशीर्वाद भी नहीं मिला। राजा ने आचार्य श्री को नमोस्तु किया और कुछ प्रश्न किये किन्तु आचार्य श्री भी मौन रहे। मंत्री मिथ्यादृष्टि थे। राजाज्ञा से दर्शनार्थ आये थे। मंत्री दुष्ट भाव से कहने लगे-राजन्, इन मुनियों को कुछ ज्ञान नहीं है। इसलिए ये मौन रहने का ढोंग कर रहे हैं (क्योंकि

‘मौन मूर्खस्य लक्षणम्’ मौन रहना मूर्खों का लक्षण है। जो मूर्ख अज्ञानी होते हैं, ज्ञान न होने से मौन रहते हैं। मंत्री ने कहा-राजन्! आपके जैसे महान् महापुरुष के आने पर भी आशीष नहीं दिया, ये आपका बड़ा अपमान है।

सांसारिक कार्यों में कर्म बाँधते हैं, उन्हें धर्मस्थल पर धो लेते हैं। किन्तु धर्मस्थल पर बंधे कर्म कहाँ धुलेंगे?

साधु के ऊपर तलवार जो पहले उठायेगा उसे कर्म का बंध होगा। क्रोध और मान धक्का लगा रहा है (किन्तु उनके हाथ पीछे हट रहे हैं। चारों ने सलाह की और एक साथ तलवार चलाई। उसी समय उस स्थान के रक्षकदेव का आसन कम्पायमान हुआ। उसने उन सबको उसी अवस्था में कीलित कर दिया। जब-जब किसी संत और भगवन्त पर उपसर्ग होता है तो अवश्य ही कोई भक्त आकर उपसर्ग दूर कर दुष्टों को दण्ड देते हैं। प्रातः काल सब लोगों ने उन मंत्रियों को उसी प्रकार कीलित तथा श्रुतसागर मुनि को ध्यानावस्था में अवस्थित देखा। मंत्रियों की कुचेष्टा से राजा बहुत क्रुद्ध हुआ। परन्तु ये मंत्री वंया परम्परा से चले आ रहे हैं। यह विचारकर उन्हें मृत्यु दण्ड तो नहीं सिर्फ गर्दभारोहण कर मुँह काला करके देश से निकाल दिया।

तदन्तर कुरुजागल देश के हस्तिनापुर नगर में राजा महापद्म राज्य करते थे। उसकी रानी का नाम लक्ष्मीमति था। उनके दो पुत्र थे-पद्म और विष्णु। एक समय राजा महापद्म, पद्मनामक पुत्र को राज्य देकर विष्णु नामक पुत्र के साथ श्रुतसागर चन्द्र नामक आचार्य के पास मुनि हो गये। वे बलि आदिक मंत्री यहाँ आकर पद्मराजा के मंत्री बन गये। उसी समय कुमपुर के दुर्ग में राजा सिंहबल रहता था। राजा पद्म उसे पकड़ने की चिंता में दुर्बल होता जा रहा था। उसे दुर्बल देखकर एक दिन बलि ने कहा कि ‘हे देव! दुर्बलता का क्या कारण है?’ राजा ने उसे दुर्बलता का कारण बताया कि राजा सिंहबल हमारे राज्य पर आक्रमण करता है, हम उसे जीवित नहीं पकड़ पा रहे हैं। यह बात सुनकर तथा आज्ञा प्राप्तकर

बाँ आदि मंत्री वहाँ गये और अपनी बुद्धि के माहात्म्य से दुर्ग को तोड़कर राजा सिंहबल को बन्दी बनाकर वापस आ गये और उन्होंने सिंहबल राजा पद्म को सौंप दिया। राजा पद्म ने खुश होकर मंत्रियों से कहा-‘तुम अपना वाँछित वर माँगो, जो माँगो तुम्हें दिया जाएगा (‘किन्तु मंत्री बहुत चतुर थे। बलि ने कहा-जब आवश्यकता पड़ेगी तब हम वर माँग लेंगे।

राजा ने मंत्रियों से कहा-बोलो, क्या चाहते हो? दुष्ट मंत्री ने कहा-हम सात दिन का राज्य चाहते हैं। तदन्तर राजा पद्म सात दिन का राज्य देकर अन्तःपुर में चला गया। इधर मंत्री ने आतापगिर पर कायोत्सर्ग से खड़े हुए मुनियों को बाड़ी से वेष्टित कर यज्ञ करना शुरू कर दिया। उस यज्ञ में जूठे सकोरे, कचरा, माँस, बकरा आदि पशुओं का कलेवर तथा धूप आदि के द्वारा मुनियों को मारने के लिए बहुत भारी उपसर्ग किया। मुनि सन्यास लेकर नियम सल्लेखना में स्थिर हो गये।

प्यारे बन्धुओ! मुनियों के ऊपर उपसर्ग हो रहा है (किन्तु राजा को कोई खबर नहीं। मिथिलागिरी में आधी रात के समय बाहर निकले हुए श्रुतसागर चन्द्र आचार्य ने आकाष में काँपते हुए श्रावण नक्षत्र को देखा तो मुँह से निकला-‘ ओह! महामुनियों पर उपसर्ग हो रहा है।’ यद्यपि साधुजन रात्रि में मौन रहते हैं (किन्तु इस स्थिति को देखकर बोल पड़े। पास ही बैठे पुष्पधर नामक विद्याधर क्षुल्लक ने पूछा कि कहाँ, किस पर घोर उपसर्ग हो रहा है? उन्होंने कहा कि ‘हस्तिनापुर में अकंपनाचार्य आदि सात सौ मुनियों पर उपसर्ग हो रहा है।’ यह उपसर्ग कैसे दूर हो सकता है? क्षुल्लक द्वारा पूछे जाने पर कहा कि ‘धरणिभूषण पर्वत पर विक्रिया ऋद्धि के धरक विष्णुकुमार मुनि स्थित हैं, वे उपसर्ग दूर कर सकते हैं।’ उनको तपस्या के प्रभाव से विक्रिया ऋद्धि प्राप्त हुई है (किन्तु उन्हें इस बात का ज्ञान नहीं है। ऐसा सुनकर क्षुल्लक उनके पास गये और सब समाचार कह सुनाया। उन्होंने अपना हाथ फैलाकर देखा तो हाथ सुमेरु पर्वत तक पहुँच गया। तब ज्ञात हुआ कि ऋद्धि प्राप्त हो चुकी है। प्यारे बन्धु! इससे साधुओं की निष्पृहता ज्ञात होती है।

छह दिन तक क्रम-क्रम से यज्ञ होता रहा। साधुओं पर उपसर्ग हो रहा है। राजा वचनब) था (क्योंकि सात दिन का राज्य और साथ में अभयदान भी दिया था। विक्रिया का निर्णय कर मुनि विष्णुकुमार ने हस्तिनापुर जाकर राजा पद्म ने लज्जित होकर कहा-‘क्या करूँ मैंने पहले इन्हें वरदान दे दिया था।’

पश्चात् विष्णुकुमार मुनि बटुक का भेष बनाकर यज्ञस्थल में आये और उत्तम शब्दों द्वारा वेद पाठ शुरु कर दिया। पश्चात् ‘भिक्षाम् देहि-2’ की आवाज लगाई। बौने ब्राह्मण ने कहा- हमें ज्यादा नहीं बस तीन पग भूमि दे दो। मंत्री ने कहा- ब्राह्मण तुम मकान माँग लो, वस्त्र आदि माँग लो। तीन पग भूमि में तो तुम ठीक से बैठ भी नहीं पाओगे। तब बटुक ब्राह्मण ने कहा- देते हो कि नहीं अन्यथा मैं चला। तब मंत्री ने कहा- अच्छा तुम्हें तीन पग भूमि देता हूँ। ब्राह्मण ने कहा-राजा हमको विष्वास नहीं है कि तुम वचन का पालन करोगे। सिर पर कलष लेकर अग्नि की साक्षी में प्रतिज्ञा करो कि तीन पग भूमि मुझे दोगे। राजा ने प्रतिज्ञा की, हम वचन का पालन करेंगे। तब बटुक ने अपनी विक्रिया फैलाना प्रारम्भ की एक पैर सुमेरु पर्वत पर रखा और दूसरा पैर मानुषोत्तर पर्वत पर रखा (किन्तु तीसरा पैर कहाँ रखा जाए पूँछने पर लज्जित मंत्री चरणों में झुक जाते हैं। अब तीसरा कदम मेरी पीठ पर रख दीजिए भगवन्! मंत्रियों ने ऐसा कहा। प्यारे बन्धुओ! विष्णुकुमार मुनि के अन्दर कितना वात्सल्य था कि साधु और धर्म के प्रति अपनी जीवन भर की साधना को दाव पर लगा दिया। उस समय धर्म की रक्षा की थी (किन्तु वर्तमान में कतिपय साधुओं के द्वारा ऐसा उपदेश दिया जाता है कि नगर में साधु आये, पहले उसकी परीक्षा करो, उसे खोजो फिर आहार दो। क्या विष्णुकुमार मुनि ने भी उसकी परीक्षा की, बाद में उपसर्ग टाला था? नहीं न। मुनिराज ने पीठ पर पैर नहीं रखा जो चरणों में झुक गया, उसे गले से लगा लिया था, उसे आशीर्वाद दिया। मंत्री के जीवन में अमूलक परिवर्तन हुआ। वे चारों मंत्री जैनधर्म के अनुयायी हो गये।

मुनिराज विष्णुकुमार ने वात्सल्य का परिचय दिया। सात दिन के बाद आज का दिन रक्षाबंधन का दिन बन गया था। हे भव्य आत्माओ! कषायरूपी शत्रुओं पर तुम्हें विजय प्राप्त करना है। तभी तुम्हारा रक्षाबंधन मनाना सार्थक होगा। आचार्य संघ सहित सात सौ मुनि उपसर्ग दूर होने पर शरीर से शिथिल हो चुके थे। लोगों के आग्रह पर आहारचर्या पर निकलते हैं। जिनके घर पर आहार हुए वे श्रावक धन्य हैं। बाकी श्रावक क्या करें तो उन्होंने एक-दूसरे को अपने घर में आहार कराया और आपस में रक्षासूत्र बाँधा था और ये संकल्प किया था कि धर्म की रक्षा के लिए आगे आएँगे।

मंगलाष्टक (भाषा)

पूजनीय इन्द्रों से अर्हत्, सिद्ध क्षेत्र सिद्धी स्वामी।
जिन शासन को उन्नत करते, सूरि मुक्ती पथगामी॥
उपाध्याय हैं ज्ञान प्रदायक, साधू रत्नत्रय धारी।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥1॥
नमित सुरासर के मुकुटों की, मणिमय कांति शुभ्र महान्।
प्रवचन सागर की वृद्धि को, प्रभु पद नख हैं चंद्र समान॥
योगी जिनकी स्तुति करते, गुण के सागर अनगारी।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥2॥
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण युत, निर्मल रत्नत्रयधारी।
मोक्ष नगर के स्वामी श्री जिन, मोक्ष प्रदाता उपकारी॥
जिन आगम जिनचैत्य हमारे, जिन चैत्यालय सुखकारी।
धर्म चतुर्विध पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी॥3॥
तीन लोक में ख्यात हुए हैं, ऋषभादिक चौबीस जिनदेव।
श्रीयुत द्वादश चक्रवर्ति हैं, नारायण नव हैं बलदेव॥
प्रति नारायण सहित तिरेसठ, महापुरुष महिमाधारी।
पुरुष शलाका पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी॥4॥
जया आदि हैं अष्ट देवियाँ, सोलह विद्यादिक हैं देव।
श्रीयुत तीर्थकर की माता-पिता, यक्ष-यक्षी भी एव॥
देवों के स्वामी बत्तिस वसु, दिक् कन्याएँ मनहारी।
दश दिक्पाल सहित विघ्नों के, नाशक हों मंगलकारी॥5॥
सुतप वृद्धि करके सर्वौषधि, ऋद्धी पाई पञ्च प्रकार।
वसु विधि महा निमित्त के ज्ञाता, वसुविधि चारण ऋद्धीधार॥
पंच ज्ञान तिय बल भी पाये, बुद्धि सप्त ऋद्धीधारी।
ये सब गण नायक पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥6॥
आदिनाथ स्वामी अष्टापद, वासुपूज्य चंपापुर जी।
नेमिनाथ गिरनार गिरि से, महावीर पावापुर जी॥
बीस जिनेश सम्मेदशिखर से, मोक्ष विभव अतिशयकारी॥

सिद्ध क्षेत्र पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥7॥
व्यंतर भवन विमान ज्योतिषी, मेरु कुलाचल इष्वाकार।
जंबू शाल्मलि चैत्य वृक्ष की, शाखा नंदीश्वर वक्षार॥
रूप्यादि कुण्डल मनुजोत्तर, में जिनगृह अतिशयकारी।
वे सब ही पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥8॥
तीर्थकर जिन भगवंतों को, गर्भ जन्म के उत्सव में।
दीक्षा केवलज्ञान विभव अरु, मोक्ष प्रवेश महोत्सव में॥
कल्याणक को प्राप्त हुए तब, देव किए अतिशय भारी।
कल्याणक पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥9॥
धन वैभव सौभाग्य प्रदायक, जिन मंगल अष्टक धारा।
सुप्रभात कल्याण महोत्सव, में सुनते-पढ़ते न्यारा॥
धर्म अर्थ अरु काम समन्वित, लक्ष्मी हो आश्रयकारी।
मोक्ष लक्ष्मी 'विशद' प्राप्त कर, होते हैं मंगलकारी॥10॥

॥इति मंगलाष्टक॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

पञ्चाचार परायणाः सुमुनयः रत्नत्रयाराधकाः।
द्वादश तप त्रय गुप्ति गोपन पराः दश धर्म संराधकाः॥
समता वन्दन स्तुति प्रतिक्रमण, स्वाध्याय ध्यानः पराः।
आचार्या त्रय लोक पूजित पदं, वन्दे विशदसागरम्॥

प्रतिष्ठा विधि

हस्त शुद्धि-ॐ ह्रीं असुजर-सुजर हस्त प्रच्छालनं करोमि स्वाहा।
अमृत शुद्धि मंत्र-ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं
स्रावय-स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय
ठः ठः ह्रीं स्वाहा।

जल शुद्धि मंत्र

ॐ हां ह्रीं हूं ह्रीं हः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्म महापद्म तिगिंछ
केसरि महापुण्डरीक पुण्डरीक गंगा सिन्धु रोहिद्रोहितास्या हरिद्धरिकान्ता

सीता सीतोदा नारी नरकान्त सुवर्णकूला रूप्यकूला रक्ता रक्तोदा
क्षीराम्भोनिधि शुद्ध जलं सुवर्ण घटं प्रक्षालितपरिपूरितं नवरत्न गंधाक्षत
पुष्पार्चित ममोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं क्षं
क्षं लं लं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा।

दिग्बन्धन

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां पूर्व दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय
निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिण दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय
निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ हूं णमो आयरियाणं हूं पश्चिम दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय
निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ ह्रौं णमो उवज्जायाणं ह्रौं उत्तर दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय
निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ हः णमो लोए सव्वसाहूणं हः सर्व दिशा समागतान् विघ्नान्
निवारय निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रां ह्रीं हूं ह्रौं हः ऊर्ध्वलोक, अधो लोक मध्यलोक
समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष स्वाहा।)

रक्षासूत्र बन्धन मंत्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते तीर्थंकर परमेश्वराय कर पल्लवे
रक्षाबन्धनं करोमि एतस्य समृद्धिरस्तु। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः स्वाहा।

तिलक करण मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतपराक्रमाय
ते भवतु। (यह मंत्र पढ़कर गृहस्थाचार्य सभी पात्रों को तिलक लगावें।)

अंगन्यास विधि

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मम गात्रे रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वस्त्रं रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ हूं णमो आयरियाणं हूं मम पूजाद्रव्यं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रौं णमो उवज्जायाणं ह्रौं मम स्थलं रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ हः णमो लोए सव्वसाहूणं हः सर्व जगत् रक्ष रक्ष स्वाहा।

मण्डप प्रतिष्ठा मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं हूं ह्रौं हः ऐतेषां पात्रशुद्धिं सर्वांगशुद्धिः भवतु।
ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः नमोर्हते श्रीमते पवित्रर जलेन मण्डप
शुद्धिं करोमि स्वाहा। (मण्डप पर जल से शुद्धि करें)
भो चतुर्णिकाय देवाः! स्वथाने तिष्ठ तिष्ठ स्वनियोगं कुरु कुरु स्वाहा।
भो! पूर्व दिशा..विदिशा के प्रतिहारी स्व स्थाने ----
भो! दक्षिण दिशा..विदिशा के प्रतिहारी स्व स्थाने ----
भो! पश्चिम दिशा ..विदिशा के प्रतिहारी स्व स्थाने ----
भो! उत्तर दिशा ..विदिशा के प्रतिहारी स्व स्थाने ----
भो! वास्तु कुमार देवाः मेघकुमार वातकुमार देवाः, अग्नि कुमार
देवाः, नाग कुमार देवाः स्वस्थाने ----
ॐ ह्रां ह्रीं हूं ह्रौं हः जिन मण्डप स्थले धरित्री जाग्रते अवस्थायां
कुरु कुरु स्वाहा।
भो! क्षेत्रपाल देवः स्वथाने तिष्ठ तिष्ठ स्वनियोगं कुरु कुरु स्वाहा।
भो! धनद रत्न वृष्टि कुरु कुरु
रक्षा मन्त्र-ॐ नमो अर्हते सर्व रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।
शांति मंत्र-ॐ क्षूं हूं फट् किरिटीं घातय घातय, परविघ्नान् स्फोटय
स्फोटय, सहस्रखण्डान् कुरु, परमुद्रां छिन्द- छिन्द, परमन्त्रान् भिन्द-भिन्द,
क्षां क्षः फट् स्वाहा

यत्पंचवर्णाक्तपवित्रसूत्रं, सूत्रोक्तततवाभमनेकमेकम्।

तेनत्रिवारे परिवेष्टयामः, शिष्टेष्टयागाश्रयमण्डपेन्द्र॥

मन्त्रः-ॐ अनादिपरब्रह्मणे नमो नमः। ॐ ह्रीं जिनाय नमः। ॐ चतुर्गलाय
नमः। ॐ चतुर्लोकोत्तमाय नमो नमः। ॐ चतुः शरणायन नमो
नमः---अस्य विधान --- नामधेयं यजमानस्य श्री ---यजमानस्य

सपरिवारे वर्धस्व-2 विजस्य -2 भवतु-2 सर्वदा शिवं कुरु।

कलश में सामग्री एवं श्रीफल रखने का मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः मंगल कलशे मंगल कार्यं निर्विघ्न
परिसमाप्त्यर्थं पूंगी फलानि प्रभृति वस्तुनि प्रक्षिपामीति स्वाहा।

मंगल कलश स्थापना मंत्र

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादिब्रह्मणे मतेऽस्मिन् विधीयमाने
श्री (विधान) महामण्डल विधान कार्यं। ...श्री वीर निर्वाण संवत्सरे,
...मासे, ...पक्षे, ...तिथौ, ...दिने, ...लग्ने, भूमिशुद्धयर्थं, पात्रशुद्धयर्थं,
शान्त्यर्थं पुण्याहवाचनार्थं नवरत्नगन्धपुष्पाक्षत श्रीफलादिशोभितं
शुद्धप्रासुकतीर्थजलपूरितं मंगलकलशस्थापनं करोमि श्रीं इवीं इवीं हं
सः स्वाहा।

दीपक स्थापना

रुचिरदीप्तिकरं शुभदीपकं, सकललोकसुखाकर-मुज्ज्वलम्।
तिमिरजालहरं प्रकरं सदा, किल धरामि सुमंगलकं मुदा॥

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि।

(मुख्य दिशानुसार आग्नेय कोण में दीपक स्थापित करें।)

शास्त्र स्थापना

अरहंत-भासियत्थं गणहर-देवेहिं गंथियं सम्मं।

पणमामि भत्तिजुत्तो सुदणाण-महोवहिंसिरसा॥

ॐ ह्रीं जिन मुखोदभूत रत्नत्रय स्वरूप जिन शास्त्र स्थापयामि स्वाहा।

पात्र शुद्धि

शोधये सर्व पात्राणि, पूजार्थानपि वारिभिः।

समाहितो यथाम्नायं, करोमि सकलीक्रियाम्॥

ॐ ह्रां ह्रीं हूं हौं हः नमोऽर्हते श्रीमते पवित्रतर जलेन पात्र शुद्धिं
करोमि स्वाहा।

पंचामृत अभिषेक पाठ

(शाम्भू छन्द)

श्रीमत् जिनवर वन्दनीय हैं, तीन लोक में मंगलकार।
स्याद्वाद के नायक अनुपम, अनन्त चतुष्टय अतिशयकार॥
मूल संघ अनुसार विधि युत, श्री जिनेन्द्र की शुभ पूजा।
पुण्य प्रदायक सदृष्टि को, करने वाली कर्म शमन॥1॥

ॐ ह्रीं क्ष्वीं भूः स्वाहा स्नपन प्रस्तावनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्रीमत् मेरू के दर्भाक्षत, युक्त नीर से धो आसन।
मोक्ष लक्ष्मी के नायक जिन, का शुभ करके स्थापन॥
मैं हूँ इन्द्र प्रतिज्ञा कर शुभ, धारण करके आभूषण।
यज्ञोपवीत मुद्रा कंकण अरु, माला मुकुट करूँ धारण॥2॥

ॐ नमो परम शान्ताय शांतिकराय पवित्रीकृताय अहं रत्नत्रयस्वरूपं यज्ञोपवीत
धारयामि मम गात्रं पवित्रं भवतु ह्रीं नमः स्वाहा।

तिलक लगाने का मंत्र

हे विबुधेश्वर! वृन्दों द्वारा, वन्दनीय श्री जिन के बिम्ब।
चरण कमल का वन्दन करके, अभिषेकोत्सव कर प्रारम्भ॥
स्वयं सुगन्धी से आये ज्यों, भ्रमर समूहों का गुंजन।
गंध अनिन्द्य प्रवासित अनुपम, का मैं करता आरोपण॥3॥

ॐ ह्रीं नवांग तिलकं अवधारयामि स्वाहा।

भू प्रच्छालन मंत्र

जो प्रभूत इस लोक में अनुपम, दर्प और बल युक्त सदैव।
बुद्धीशाली दिव्य कुलों में, जन्मे जो नागों के देव॥
मैं समक्ष उनके शुभ अनुपम, करने हेतू संरक्षण।
स्नपन भूमि का करता हूँ, अमृतजल से प्रच्छालन॥4॥

ॐ ह्रीं जलेन भूमि शुद्धिं करोमि स्वाहा।

पीठ प्रच्छालन मंत्र

इन्द्र क्षीर सागर के निर्मल, जल प्रवाह वाला शुभ नीर।
हरता है संसार ताप को, काल अनादि जो गम्भीर॥

जिनवर के शुभ पाद पीठ का, प्रच्छालन करता कई बार।
हुआ उपस्थित उसी पीठ को, प्रच्छालित मैं करूँ सम्हार।।5॥
ॐ हां हीं हूँ हौं हः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन पीठप्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

श्री कारलेखन मंत्र

श्री सम्पन्न शारदा के मुख, से निकले जो अतिशयकार।
विघ्नों का नाशक करता है, सदा सभी का मंगलकार।।
स्वयं आप शोभा से शोभित, वर्ण रहा पावन श्रीकार।
श्री जिनेन्द्र के भद्रपीठ पर, लिखता हूँ मैं अपरम्पार।।6॥

ॐ हीं पाण्डुकशिला पीठे श्रीकारलेखनं करोमि स्वाहा।

अग्नि प्रज्वलन क्रिया

दोहा- मोह रूप वन दहन में, पावन रहे समर्थ।
अग्नि प्रज्वलन कर रहे, हम पूजा के अर्थ।।7॥

ॐ हीं ज्ञानोद्योताय नमः स्वाहा।

दश दिग्पाल आह्वान

इन्द्र अग्नि यम नैऋत पावन, वरुण पवन कुबेरैशान।
धरणेन्द्र सोम सभी जिनवर का, करो न्हवन तुम महति महान।।
अपने-अपने अनुचर सारे, अपने सब चिन्हों के साथ।
करो भेंट स्वीकार यहाँ सब, जिन पद आप झुका कर माथ।।8॥

दशदिक्पाल के मंत्र

ॐ आं क्रौं हीं इन्द्र आगच्छ-आगच्छ इन्द्राय स्वाहा।।1॥
ॐ आं क्रौं हीं अग्ने आगच्छ-आगच्छ आग्नेय स्वाहा।।2॥
ॐ आं क्रौं हीं यम आगच्छ-आगच्छ यमाय स्वाहा।।3॥
ॐ आं क्रौं हीं नैऋत्य आगच्छ-आगच्छ नैऋताय स्वाहा।।4॥
ॐ आं क्रौं हीं वरुण आगच्छ-आगच्छ वरुणाय स्वाहा।।5॥
ॐ आं क्रौं हीं पवन आगच्छ-आगच्छ पवनाय स्वाहा।।6॥
ॐ आं क्रौं हीं कुबेर आगच्छ-आगच्छ कुबेराय स्वाहा।।7॥
ॐ आं क्रौं हीं ऐशान आगच्छ-आगच्छ ऐशानाय स्वाहा।।8॥
ॐ आं क्रौं हीं धरणेन्द्र आगच्छ-आगच्छ धरणेन्द्राय स्वाहा।।9॥
ॐ आं क्रौं हीं सोम आगच्छ-आगच्छ सोमाय स्वाहा।।10॥

दशदिक्पालों का अर्घ्य

तीन लोक के नाथ कहे जो, केवलज्ञानी महति महान।
दस प्रकार के धर्म की वृष्टी, तीन लोक में करें प्रधान।।
गुण रत्नों के कहे महार्णव, जिनपद चढ़ा रहे हम अर्घ्य।
‘विशद’ कुसुम अक्षत आदिक का, अर्घ्य चढ़ा पद पाओ अनर्घ्या।।9॥
ॐ हीं इन्द्रादि दशदिग्पालेभ्यो इदं अर्घ्यं पाद्यं दीपं धूपं चरुं बलिं स्वस्तिकं
अक्षतं यज्ञ भागं च यजामहे प्रतिगृहतां प्रति गृहतां स्वाहा।

क्षेत्रपाल का अर्घ्य

भो! क्षेत्रपाल हो रक्षपाल, तुम जिन शासन के महति महान।
गुण चन्दन तेलादि धूप ले, वसु द्रव्य से करते सम्मान।।
यज्ञ भाग ले करें अर्चना, श्री जिनेन्द्र का मंगलगान।
जिनाभिषेक पूजा विधान में, आके पाओ निज स्थान।।10॥
ॐ आं क्रौं अत्रस्थ विजयभद्रादि पञ्च क्षेत्रपाल इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं दीपं चरुं
वलिं स्वस्तिकं अक्षतं यज्ञ भागं च यजा महे प्रतिग्रहतां-प्रतिग्रहतामीति स्वाहा।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत)

जिनबिम्ब स्थापन मंत्र

गिरि सुमेरु के अग्रभाग में, पाण्डुक शिला का है स्थान।
श्री आदि जिन का पहले ही, इन्द्र किए अभिषेक महान्।।
कल्याणक का इच्छुक मैं भी, जिन प्रतिमा का स्थापन।
अक्षत जल पुष्पों से पूजा, भाव सहित करता अर्चना।।11॥
ॐ हीं श्रीं क्लीं ऐं अर्ह श्रीं वर्णे प्रतिमास्थापनं करोमि स्वाहा।

अर्घ्य

निर्मल जल परिमल चंदन अरु, श्री को सुखकर ले अक्षत।
श्रेष्ठ सुगन्धित पुष्प सु चरु शुभ, शुद्ध बनाए अमृतवत्।।
सुर भवनों को करें प्रकाशित, ऐसे लेकर दीप महान।
श्रेष्ठ सुगन्धित धूप और फल, से जिन का करते गुणगान।।13॥
ॐ हीं श्रीं क्लीं अर्ह श्रीं वर्णे जिनबिम्ब स्थापना करोमि अर्घ्यं निर्वं।

(चारों दिशा में चार कलश स्थापन मंत्र)

उत्तमोत्तम पल्लव से अर्चित, कहे गये जो महति महान्।
स्वर्ण और चाँदी ताँबे अरु, रांगा निर्मित कलश महान्।।

चार कलश चारों कोणों पर, जल पूरित ज्यों चउ सागर।
ऐसा मान करूँ स्थापन, भक्ति से मैं अभ्यन्तर॥12॥
ॐ ह्रीं स्वस्त्ये चतुः कोणेषु चतुः कलश स्थापनं करोमि स्वाहा।

(जल से अभिषेक करें)

श्री जिनेन्द्र के चरण दूर से, नम्र हुए इन्द्रों के भाला।
मुकुट मणी में लगे रत्न की, किरणच्छवि से धूसर लाल॥
जो प्रस्वेद ताप मल से हैं, मुक्त पूर्ण श्री जिन भगवान।
भक्ति सहित प्रकृष्ट नीर से, मैं करता अभिषेक महान्॥14॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इर्वीं
इर्वीं श्वीं श्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते
पवित्रतरजलेन जिनाभिषेचयामि स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाया।

जिनाभिषेक करके “विशद” पावन अर्घ्य चढ़ाया।

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो जलेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं नि. स्वाहा।

इक्षुरसाभिषेक

इन्द्र अञ्जली बद्ध शीश पर, रख के अपने दोनों हाथ।
श्री जिनेन्द्र के चरण झुकाते, भक्ति भाव से अपना माथ॥
तुरत पेलकर इच्छूरस से, शीश पे देते हे प्रभु! धार।
नाथ! आप हो करुणाकारी, करो सभी का प्रभु उद्धार॥15॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इर्वीं
इर्वीं श्वीं श्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरइक्षुरसेन
जिनाभिषेचयामिति स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाया।

जिनाभिषेक करके विशद, पावन अर्घ्य चढ़ाया।

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो इक्षु रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शर्करा रसाभिषेक

रजो विलाश कर्पूर पिष्ट शुभ, मधुर शर्करा रस शुभकार।
मोक्षरमा के स्वामी जिन के, शीश पे देते पावनधार॥

मन वाञ्छित फल देने वाली, श्री जिनेन्द्र की भक्ति अपार।
जिन चरणों में भक्त स्वतः ही, फल पाते हैं विस्मयकार॥
ॐ ह्रीं...शर्करा रसेनाभिसिंचयामि स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाया।

जिनाभिषेक करके “विशद” पावन अर्घ्य चढ़ाया।

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो शर्करा रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नारियल रसाभिषेक

स्वच्छ नारियल का जल शीतल, जो पवित्र है शुभ मनहार।

लोकालोक प्रकाशी जिनका, न्हवन कराते मंगलकार॥

ॐ ह्रीं...नारियल रसेन जिनाभिसिंचयामि स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाया।

जिनाभिषेक करके “विशद” पावन अर्घ्य चढ़ाया।

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो नारियल रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दाड़िम रसाभिषेक

दाड़िम के दाने मोती सम, श्रेष्ठ पक्व लेकर मनहार।

तुरत पेलकर रस ले पावन, न्हवन कराते अतिशयकार॥

ॐ ह्रीं...दाड़िम रसेन जिनाभिसिंचयामि स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाया।

जिनाभिषेक करके “विशद” पावन अर्घ्य चढ़ाया।

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो दाड़िम रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आम्र रसाभिषेक

पके आम का रस ले मीठा, शोभित होवे स्वर्ण समान।

श्री जिनेन्द्र के शीश पे देते, जिसकी धारा महति महान॥

ॐ ह्रीं...आम्र रसेनाभिसिंचयामि स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाया।

जिनाभिषेक करके “विशद”, पावन अर्घ्य चढ़ाया।

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो आम्र रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

फल रसाभिषेक

वीतराग जिन बिम्ब मनोहर, तीन लोक में मंगलकार।
पक्व...के रस द्वारा, देते जिन के शीश पे धार॥

ॐ ह्रीं...रसेनाभिसिंचयामि स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके “विशद”, पावन अर्घ्य चढ़ाय।

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो आम्र रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

घृताभिषेक

श्रेष्ठ वर्ण कंचन सम सुन्दर, देह प्रभा जिनकी शुभकार।
अनुपमेय गुण रहे मनोहर, अर्हन्तो के मंगलकार॥
नमस्कार कर शीश पे देते, हैं हम जिन के घृत की धार।
परम सुगन्धी वाला होता, वातावरण श्रेष्ठ मनहार॥16॥

ॐ ह्रीं....घृताभिषेकं करोमिति स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके विशद पावन अर्घ्य चढ़ाय।

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो घृताभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दुग्धाभिषेक

पूर्ण चन्द्रमा की किरणों सम, धवल दुग्ध से देते धार।
जिनके यश की गौरव गरिमा, फैल रही है अतिशयकार॥
कल्पवृक्ष समनाथ! आप हैं, भवि जीवों को फल दातार।
अतः आपके चरण कमल में, वन्दन करते बारम्बार॥17॥

ॐ ह्रीं.....दुग्धाभिषेकं करोमिति स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके विशद, पावन अर्घ्य चढ़ाय।

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो दुग्धाभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दध्याभिषेक

क्षीर सिन्धु से उठी तरंगें, फैन राशि सम आभावान।
उससे सुन्दर दधि की धारा, शीश पे जिन के करें महान॥

मन वाञ्छित फल देने वाली, श्री जिनेन्द्र की भक्ति अपार।
जिन चरणों में भक्त स्वतः ही, फल पाते हैं विस्मयकार॥18॥

ॐ ह्रीं..... दध्याभिषेकं करोमिति स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके विशद पावन अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो दध्याभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सर्वौषधिअभिषेक

दही दूध घृत इच्छूरस से, जिनवर का करके अभिषेक।
उबटन करकालेय सुकुंकुम, सर्व मिलाकर करके एक॥
मिश्रित कर उज्ज्वल सर्वौषधि, से धारा देते जिनशीश।
शीश झुकाकर वन्दन करते, पाने को हम भी आशीष॥19॥

ॐ ह्रीं....सर्वौषधि जिनाभिषेकं करोमिति स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके विशद, पावन अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो सर्वौषधिअभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(चार कलश से अभिषेक करें)

इष्ट मनोरथ रहे सैकड़ों, उनकी शोभा धारे जीव।
पूर्ण सुवर्ण कलशा लेकर शुभ, लाए अनुपम श्रेष्ठ अतीव॥
भव समुद्र के पार हेतु हैं, सेतु रूप त्रिभुवन स्वामी।
करता हूँ अभिषेक भाव से, श्री जिनेन्द्र का शिवगामी॥20॥

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवतं कृपालसंतं वृषभादि वर्धमानांतंचतुर्विंशति तीर्थकरपरमदेवं
आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे....देशे....नाम.....नगरे.....एतद्.....
.....जिनचैत्यालये वीर नि. सं..... मासोत्तममासे....मासे....पक्षे....तिथौ.....वासरे
प्रशस्त ग्रहलग्न होरायां मुनिआर्यिका-श्रावक- श्राविकाणाम् सकलकर्मक्षयार्थं
चतुःकलशेन जलेनाभिषेकं करोमि स्वाहा। इति जलस्नपनम्।

(सुगन्धित कलशाभिषेक करें)

जिनके शुभ आमोद के द्वारा, अन्तराल भी भली प्रकार।
चतुर्दिशा का परम सुवासित, हो जाता है शुभ मनहार॥
चार प्रकार कर्पूर बहुल शुभ, मिश्रित द्रव्य सुगन्धीवान।
तीन लोक में पावन जिन का, करता मैं अभिषेक महान्॥23॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं
झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते
पवित्रतरजलेन पूर्णसुगन्धितकलाशाभिषेकेन जिनाभिषेचयामि स्वाहा।

दोहा- जल गन्धाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाया।

जिनाभिषेक करके विशद पावन अर्घ्य चढ़ाया॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो सुगन्धित कलशा अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चन्दन लेपन

तीन लोक में पुण्य प्रदायक, चन्दन को केसर में गारा।
करते हैं जिनबिम्बों में हम, श्रेष्ठ विलेपन मंगलकार॥
निज गुण पाने का जागे अब, हे जिनेन्द्र मेरा सौभाग्य।
नाथ! आपके गुण सौरभ से, विशद जगाए हम भी भाग्य॥21॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं जिनबिम्बोपरि चन्दन विलेपनं करोमि स्वाहा।

पुष्पवृष्टि

द्वादश योजन तक सुगन्ध जो, फैलाते हैं पुष्प पराग।
पुष्प वृष्टि करते हैं पावन, जिन चरणों में धर अनुराग॥
मोक्ष मार्ग की सिद्धी पाने, करें भाव से हे प्रभु! ध्यान।
'विशद' भाव से नाथ! आपका, करते हैं पावन गुणगान॥22॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं जिनबिम्बोपरि पुष्प वृष्टिं करोमि स्वाहा।

ऋषिमण्डल यंत्राभिषेक

ऋषीमण्डल शुभ यंत्र का, करते शुभ अभिषेक।
रोग शोक सब दूर हो, जागे विशद विवेक॥

ॐ ह्रीं पवित्रतर जलेन ऋषिमण्डल यंत्र अभिषेकं करोमि इति स्वाहा।

मंगल आरती अवतरण

रखे पात्र में श्री फल उज्ज्वल, अक्षत पुष्प मनोहर दीपा।
इत्यादिक से सज्जित थाली, मंगलमय हम लाए समीपा॥
काम दाह के नाशक हे जिन, सर्व सुखों के तुम आलया।
'विशद' आरती करते हैं हम, आके अनुपम देवालय॥

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हत्परमेष्विने नमः मंगल आरती अवतरणम् करोमि स्वाहा।

गंधोदक

जिनाभिषेक का गंधोदक शुभ, मुक्ति श्री के उदक समान।
पुण्यांकुर उत्पन्न करे जो, सुर नरेन्द्र सब वैभववान॥
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण की, लता की वृद्धी का कारण।
कीर्ति लक्ष्मी जय का साधक, 'विशद' रहा जो निस्कारण॥25॥

मस्तकोपरि गंधोदक धारयामि इति स्वाहा।

अभिषेक समय की स्तुति

(तर्ज-करले जिनवर का गुणगान आई मंगल घड़ी...)

करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी।
आई सारी नगरी, झूमे जनता सगरी॥
करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी॥1॥
प्रासुक करके जल भर लाए, सिर के ऊपर ढारे।
करते हम अभिषेक प्रभु का, जागे भाग्य हमारे॥
सिर पर रखकर लाए भक्त, देखो जल गगरी।
करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी॥2॥
पाण्डुक शिला पे जिन प्रतिमा को, भाव सहित पधराए।
चार कलश चारों कोणों पर, जल भरकर रखवाए॥
खुशियाँ छाई चारों ओर, हमारी नगरी।
करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी॥3॥

लघु शांतिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः। श्री वीतरागाय नमः। ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते
पार्श्वतीर्थकराय द्वादशगणपरिवेष्टिकाय, शुक्ल ध्यान पवित्राय, सर्वज्ञाय,
स्वयं भुवे, सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परम सुखाय, त्रैलोक्य
महीव्याप्त्याय, अनन्त संसार चक्रपरिमर्दनाय, अनन्त दर्शनाय, अनन्त
ज्ञानाय, अनन्त वीर्याय, अनन्त सुखाय, त्रैलोक्यवशंकराय, सत्यज्ञानाय,
सत्यब्रह्मणे, धरणेन्द्र पणामंडल मण्डिताय,
ऋष्यार्यिका-श्रावक-श्राविका प्रमुख चतुस्संधोपसर्ग विनाशनाय,
घातिकर्म विनाशनाय, अघातिकर्म विनाशनाय, अपवायं
अस्माकं-छिंद-छिंद भिंद-भिंद। मृत्यु छिंद-छिंद भिंद-भिंद। अतिकामं
छिंद-छिंद भिंद-भिंद। रतिकामं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। क्रोधं छिंद-छिंद
भिंद-भिंद। अग्निभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वशत्रुं छिंद-छिंद भिंद-भिंद।
सर्वोपसर्गं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वविघ्नं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वभयं
छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वराजभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वचौरभयं
छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वदुष्टभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वमृगभयं
छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वात्मचक्रभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वपरमंत्र
छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वशूल रोगं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वक्षय रोगं
छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वकुष्ठ रोगं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वक्रूर रोगं
छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वनरमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वगजमारीं
छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वाश्वमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वगोमारीं
छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वमहिषमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वधान्यमारीं
छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्ववृक्षमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वगुल्ममारीं
छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वपत्रमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वपुष्पमारीं
छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वफलमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वराष्ट्र मारीं
छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्व देशमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्व विषमारीं
छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्ववेताल शाकिनी छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्ववेदनीयं
छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वमोहनीयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वकर्माष्टकं
छिंद-छिंद भिंद-भिंद।

ॐ सुदर्शन-महाराज-मम-चक्र विक्रम-तेजो-बल शौर्य-वीर्य शान्तिं कुरु-कुरु।
सर्व जनानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व भव्यानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व गाकुलानन्दनं कुरु-कुरु।
सर्व ग्राम नगर खेट कर्वट मटंब पत्तन द्रोणमुख संवाहनन्दनं कुरु-कुरु। सर्व
लोकानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व देशानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व यजमानन्दनं कुरु-कुरु।
सर्व दुःख हन-हन, दह-दह, पच-पच, कुट-कुट, शीघ्रं-शीघ्रं।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधि-व्यसन-वर्जितं।
अभयं क्षेम-मारोग्यं स्वस्ति-रस्तु विधीयते॥

श्री शांति-मस्तु! कुल-गोत्र-धन-धान्यं सदास्तु। चन्द्रप्रभ-वासुपूज्य-मल्लि-
वर्द्धमान-पुष्पदंत-शीतल-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-इत्येभ्यो नमः।

इत्यनेन मंत्रेण नवग्रहाणां शान्त्यर्थं गंधोदक धारा-वर्षणम्।

शांति मंत्र-ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष दोष कल्मषाय दिव्य तेजो
मूर्तये नमः श्री शान्तिनाथ शान्ति कराय सर्व विघ्न प्रणाशनाय सर्व रोगापमृत्यु
विनाशनाय सर्व पर कृच्छुद्रोपद्र विनाशनाय सर्व क्षामडामर विघ्न विनाशनाय
ॐ हां हीं हूं हौं हः अ सि आ उ सा नमः सर्व देशस्य सर्व राष्ट्रस्य सर्व
संघस्य तथैव मम सर्व शान्ति तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु स्वाहा।

शांति शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां।
शांतिः निरन्तर तपोभव भावितानां॥
शांतिः कषाय जय जृम्भित वैभवानां।
शांतिः स्वभाव महिमान मुपागतानां॥

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्र सामान्य तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान जिनेन्द्रः॥
अज्ञान महातम के कारण, हम व्यर्थ कर्म कर लेते हैं।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, प्रभु जल की धारा देते हैं।
अर्घ-जल गंधाक्षत पुष्पचरु फल, दीप धूप का अर्घ्य बनाया।
'विशद'भाव से शांति धार दे, श्री जिनपद में दिया चढ़ाया॥
ॐ हीं श्री क्लीं त्रिभुवनपते शान्तिधारां करोमि नमोऽर्हते अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

मूलनायक सहित समुच्चय अर्घ्य

अष्टम वसुधा पाने को यह, अर्घ्य बनाकर लाए हैं।
अष्टगुणों की सिद्धि पाने, तव चरणों में आए हैं।।
णामोकार नन्दीश्वर मेरु, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष।।
देव-शास्त्र-गुरु धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थकर बीस।
कृत्रिम कृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक 1008 श्री..... सहित पंचकल्याणक पदालंकृत
सर्व जिनेश्वर, श्री अरहंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्व साधु-जिनधर्म-
जिनागम-जिनचैत्य-जिन चैत्यालय, रत्नत्रय-दशलक्षण-सोलहकारण-त्रिलोक
स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय कैलाश गिरि-सम्मद शिखर-
गिरनार-चम्पापुर-पावापुर आदि निर्वाण क्षेत्र अतिशय क्षेत्र, तीस चौबीसी
के सात सौ बीस तीर्थकर; विद्यमान बीस तीर्थकर, तीन कम नौ करोड़
गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो सम्पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व आचार्य परमेष्ठी अर्घ्य

पूर्वाचार्यश्री शांति सागर जी, आदिसागराचार्यप्रवर।
महावीर कीर्ति वीर सिन्धु शिव, विमल सिन्धु सन्मति सागर
भरत सिन्धु कुन्धुसागर जी, विद्यानन्द विद्यासागर।
पुष्पदन्त गुरु विराग सिन्धुपद, वन्दन मेरा विशद सादर।

ॐ हूँ सर्व आचार्य परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आचार्य श्री का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिन्धु के श्री चरणों में, अर्घ्य समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ्य हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

अभिषेक समय की आरती

(तर्ज : आनन्द अपार है....)

जिनवर का दरबार है, भक्ती अपरम्पार है।
जिनबिम्बों की आज यहाँ पर, होती जय-जयकार है।।टेक।।
दीप जलाकर आरति लाए, जिनवर तुमरे द्वार जी।
भाव सहित हम गुण गाते हैं, हो जाए उद्धार जी।।1।।
जिनवर...

मिथ्या मोह कषायों के वश, भव सागर भटकाए हैं।
होकर के असहाय प्रभू जी, द्वार आपके आए हैं।।2।।
जिनवर...

शांति पाने श्री जिनवर का, हमने न्हवन कराया जी।
तारण तरण जानकर तुमको, आज शरण में आया जी।।3।।
जिनवर...

हम भी आज शरण में आकर, भक्ती से गुण गाते हैं।
भव्य जीव जो गुण गाते वह, अजर अमर पद पाते हैं।।4।।
जिनवर...

नैय्या पार लगा दो भगवन्, तव चरणों सिरनाते हैं।
'विशद' मोक्ष पद पाने हेतु, दर शीश झुकाते हैं।।5।।
जिनवर का....!

लघु विनय पाठ

पूजा विधि से पूर्व यह, पढ़ें विनय से पाठ।
धन्य जिनेश्वर देवजी, कर्म नशाए आठ।।1।।
शिव वनिता के ईश तुम, पाए केवल ज्ञान।
अनन्त चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान।।2।।
पीड़ा हारी लोक में, भव दधि नाशनहार।
ज्ञायक हो त्रयलोक के, शिवपद के दातार।।3।।
धर्माभूत दायक प्रभो!, तुम हो एक जिनेन्द्र।
चरण कमल में आपके, झुकते विनत शतेन्द्र।।4।।

भवि जन को भव-सिन्धु में, एक आप आधार।
 कर्म बन्ध का जीव के, करने वाले क्षार॥5॥
 चरण कमल तव पूजते, विघ्न रोग हो नाश।
 भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश॥6॥
 यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाए राग।
 दर्श ज्ञान दे आपका, जग को विशद विराग॥7॥
 एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार।
 अतः भक्त बन के प्रभो!, आया तुमरे द्वार॥8॥

मंगल पाठ

मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत।
 धर्मागम की अर्चना, से हो भव का अंत॥9॥
 मंगल जिनगृह बिम्ब जिन, भक्ती के आधार।
 जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार॥10॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

अथ पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,

णमो उवज्जायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

ॐ ह्रीं अनादिमूल मंत्रेभ्योनमः। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो,
 धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
 साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो, धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि शरणं पव्वज्जामि,
 अरिहन्ते शरणं पव्वज्जामि, सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि,
 केवलिपण्णत्तं, धम्मं शरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

शुद्धाशुद्ध अवस्था में कोई, णमोकार को ध्याये।
 पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाए।

सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए।
 विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना रह पाए।

॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्पचरू, दीप धूप फल साथ।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, पूज रहे जिन नाथ॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंच कल्याणकेभ्यो अर्घ्यं
 निर्व. स्वाहा॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधूभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा॥2॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टाधिक सहस्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीं द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग,
 द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा॥4॥

ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरणकमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व.
 स्वाहा॥5॥

“पूजा प्रतिज्ञा पाठ”

अनेकांत स्याद्वाद के धारी, अनन्त चतुष्टय विद्यावान।
 मूल संघ में श्रद्धालू जन, का करने वाले कल्याण।
 तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा, जग मंगलकारी भगवान।
 भाव शुद्धि पाने हे स्वामी!, करता हूँ मैं भी गुणगान॥1॥
 निज स्वभाव विभाव प्रकाशक, श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान।
 तीन लोकवर्ती द्रव्यों के, विस्तृत ज्ञानी हे भगवान!
 हे अर्हन्त! अष्ट द्रव्यों का, पाया मैंने आलम्बन।
 होकर के एकाग्रचित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन॥2॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपामि।

“स्वस्ति मंगल पाठ”

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पदम सुपाश्वर्जिनेश।
 चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूं तीर्थेश॥

विमलानन्त धर्म शांती जिन, कुन्थु अरहमल्ली दें श्रेया।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पाश्वर्ष प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय॥
इति श्री चतुर्विंशति तीर्थकर स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

“परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ”

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके, हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान॥
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निस्पृह होकर करें साधना, ‘विशद’ करें स्व पर कल्याण॥1॥
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नों भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान॥
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान॥2॥
भेद आठ औषधि ऋद्धि के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश॥
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज॥3॥

॥ इति परमर्षि-स्वस्ति-मंगल-विधानं॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

स्तवन

दोहा- श्री अकम्पनाचार्य जी, मुनिवर विष्णु कुमार।
के निमित्त वात्सल्य का, चला श्रेष्ठ त्योहार॥

(ज्ञानोदय छन्द)

देव शास्त्र गुरु पूज्य लोक में, जैनागम जिन धर्म महान।
जिन चौत्यालय चौत्य हमारे, जिनका हम करते गुणगान॥
भरतैरावत में त्रैकालिक, तीर्थकर हैं गुण की खान।
शाश्वत रहें विदेह क्षेत्र में, प्राप्त करें सब पद निर्वाण॥1॥
लोकालोक के मध्य में भाई, जम्बूद्वीप है मंगलकार।
जम्बू वृक्ष के कारण जिसका, नाम पड़ा है अतिशयकार॥
जिसके भरत क्षेत्र में पावन, आर्य खण्ड में भारत देश।
नगर हस्तिनापुर है जिसमें, जिसकी महिमा रही विशेष॥2॥
सप्त षतक मुनि संघ में लेकर, श्री अकम्पनाचार्य मुनीष।
पद विहार करके आए थे, जिनके चरण झुकाएँ शीष॥
पूर्व कर्म का फल यह मानें, जिन पर हुआ घोर उपसर्ग।
सहन किए सब समता धरी, पाने चले सन्त अपवर्ग॥3॥
पद्म राय राजा के आगे, बलि आदिक मंत्री थे चार।
माँगे जो वरदान कपट से, किया पूर्व में था उपकार॥
पद्म राय ने निष्चल होके, दिया मंत्रियों को वरदान।
राज्य चलाओ सात दिनों तक, किया राज्य में यह ऐलान॥4॥
चारों ओर से अग्नि जलाकर, किये वहाँ पर कुत्सित यज्ञ।
सहन किए उपसर्ग सर्व मुनि, ध्यान लगाए जो आत्मज्ञ॥
क्षुल्लक जी ने हाल सुनाया, विष्णु कुमार मुनी के पास।
ब्राह्मण भेष धरकर मुनिवर, किए पूर्ण उपसर्ग विनाष॥5॥
श्री अकम्पनाचार्य आदि फिर, करने को निकले आहार।
रक्षा बन्धन पर्व तभी से, लोग मनाए शुभ त्योहार॥
वात्सल्य का पर्व मनाते, प्राणी होके भाव विभोर।
भव्य जीव सब हर्ष मनाए, खुशियाँ छाई चारों ओर॥6॥

(इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

श्री श्रेयांसनाथ पूजन

स्थापना

सोरठा श्रेय प्रदाता आप, श्री श्रेयान्स जिन गाए हैं।

करते हैं हम जाप, आह्वानन् कर निज हृदय।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(पद्धरि छन्द)

हम चढ़ा रहे यह शुद्ध नीर, जन्मादि रोग की मिटे पीरा।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम।।1।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन केसर को लिया साथ, भव ताप नाश हो मेरा नाथ।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम।।2।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत यह लाए धवल आज, अक्षय पद का अब मिले ताज।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम।।3।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्पों के अर्पित करें थाल, हम झुका रहे तव चरण भाल।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम।।4।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नैवेद्य चढ़ाने लिए हाथ, अब क्षुधा से मुक्ती मिले नाथ।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम।।5।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

हम जला रहे हैं यहाँ दीप, अब पहुँचे शिव पद के समीप।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम।।6।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अब नाश होय प्रभु मोह पास, शिवपुर में मेरा होय वास।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम।।7।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल चढ़ा रहे हम यहाँ आन, अब मिले शीघ्र ही मोक्ष धाम।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम।।8।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

यह अर्घ्य चढ़ाते हम अनूप, प्रगटाएँ अपना निज स्वरूप
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम।।9।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

सोरठा

पाए गर्भ भगवान्, ज्येष्ठ कृष्ण छठवीं दिना।
किए देव गुणगान, उत्सव कीन्हे गर्भ का।।1।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा षष्ठ्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुआ जन्म कल्याण, फाल्गुन कृष्ण एकादशी।
इन्द्र स्वर्ग से आन, न्हवन कराए मेरु पे।।2।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा धारे नाथ, फाल्गुन कृष्ण एकादशी।
चरण झुकाएँ माथ, सुर नर मुनि के इन्द्र सब।।3।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाए केवल ज्ञान, माघ कृष्ण की अमावस।
किए जगत कल्याण, दिव्य देशना आप दे।।4।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाऽमावस्यायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष गये भगवान, श्रावण शुक्ला पूर्णिमा।
पाए मोक्ष कल्याण, तीर्थराज सम्पेद से॥5॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला पूर्णिमायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा श्रेय प्रदायक श्रेयजिन, हुए जो मंगलकार।
जयमाला गाते चरण, भविजन बारम्बार॥

(चाल छन्द)

श्रेयांस नाथ गुणधारी, इसजग में मंगलकारी।
है सिंहपुरी शुभकारी, जन्मे श्रेयांस त्रिपुरारी॥1॥
नृप विष्णुराज कहाए, माँ वेणू देवी पाए।
यह अन्तिम गर्भ कहाए, प्रभु जन्म कल्याणक पाए॥2॥
किए रत्नवृष्टी शुभकारी, सुर किए प्रशंसा भारी।
गेण्डा लक्षण शुभ पाए, तन अस्सी धनुष का पाए॥3॥
चौरासी वर्ष की स्वामी, आयू पाए शिवगामी।
लक्ष्मी बसन्त विनशाई, लख मुनिवर दीक्षा पाई॥4॥
तब देव पालकी लाए, प्रभु को वन में पहुँचाए।
प्रभु आतम ध्यान लगाए, फिर केवल ज्ञान जगाए॥5॥
सुर समवशरण बनवाए, सात योजन का जो गाए।
प्रभु दिव्य ध्वनी सुनाए, सुर नर पशु मंगल गाए॥6॥
दोहा कर्म नाशकर के प्रभू, पाए पद निर्वाण।
भव्य जीव जिनका 'विशद', करें श्रेष्ठ गुणगान॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

श्री विष्णुकुमार मुनि पूजन

स्थापना

दोहा- वात्सल्य धरी हुए, मुनिवर विष्णुकुमार।
निज उर में आह्वान कर, पूजे बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुने! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुने! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुने! अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(तर्ज-माता तू दया करके.....)

जिसको अपना माना, उसने संताप दिया।
यह समझ नहीं आया, फिर भी क्यों राग किया॥
ऋषि विष्णुकुमार स्वामी, उपसर्ग निवारी हैं।
जिनके द्वय चरणों में, नत ढोक हमारी है॥1॥
ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व.स्वाहा।
भव-भव में हे स्वामी!, हमने संताप सहा।
अब सहा नहीं जाए, प्रभु मैटो द्वेष महा॥
ऋषि विष्णुकुमार स्वामी, उपसर्ग निवारी हैं।
जिनके द्वय चरणों में, नत ढोक हमारी है॥2॥
ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुनीन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चदनं निर्व. स्वाहा।
तन धन परिजन जो हैं, सब नष्वर है माया।
जिस तन में रहते हैं, वह क्षण भंगुर काया॥
ऋषि विष्णुकुमार स्वामी, उपसर्ग निवारी हैं।
जिनके द्वय चरणों में, नत ढोक हमारी है॥3॥
ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं निर्व. स्वाहा।
यह काम लुटेरा है, शास्वत गुण लूट रहा।
हम मौन खड़े निर्बल, ना हमसे छूट रहा॥

ऋषि विष्णुकुमार स्वामी, उपसर्ग निवारी हैं।
जिनके द्वय चरणों में, नत ढोक हमारी है॥14॥

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुनीन्द्राय कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।
इस क्षुध रोग से हम, सदियों से सताए हैं।
व्यंजन की औषधि खा, ना तृप्ती पाए हैं॥
ऋषि विष्णुकुमार स्वामी, उपसर्ग निवारी हैं।
जिनके द्वय चरणों में, नत ढोक हमारी है॥15॥

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुनीन्द्राय क्षुधरोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।
हम पर में खोए हैं, पर की महिमा गाई।
इस मोहवली ने प्रभु, निज की सुधि विसराई॥
ऋषि विष्णुकुमार स्वामी, उपसर्ग निवारी हैं।
जिनके द्वय चरणों में, नत ढोक हमारी है॥16॥

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुनीन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।
कर्मों की आँधी से, चेतन गृह विखर गया।
तव दर्शन करके प्रभु, मम चेतन निखर गया॥
ऋषि विष्णुकुमार स्वामी, उपसर्ग निवारी हैं।
जिनके द्वय चरणों में, नत ढोक हमारी है॥17॥

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु पाप बीज बोए, शिव फल कैसे पाएँ।
तव अर्चा करके हम, प्रभु सिद्धालय जाएँ॥
ऋषि विष्णुकुमार स्वामी, उपसर्ग निवारी हैं।
जिनके द्वय चरणों में, नत ढोक हमारी है॥18॥

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।
वसु कर्मों ने मिलकर, जग में भरमाया है।
अब शिव पद पाने को, यह अर्घ्य चढ़ाया है॥

ऋषि विष्णुकुमार स्वामी, उपसर्ग निवारी हैं।
जिनके द्वय चरणों में, नत ढोक हमारी है॥19॥

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुनीन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
दोहा- पूर्व पुण्य से हे प्रभो!, पाए आपके दर्श।
शांती धरा दे रहें, जागे मम उर हर्ष॥
॥शान्तये शांतिधारा॥

दोहा- पूजा करते आपकी, होके भाव विभोर।
यही भावना है विशद, बढ़ें मोक्ष की ओर॥
॥ दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

जाप-ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार महामुनये नमः।

जयमाला

दोहा- विष्णु कुमार मुनिवर किए, करुणा कर उपकार।
जयमाला गाते विशद, जिनकी मंगलकार॥

चौपाई

मुनिवर विष्णु कुमार कहाए, पावन जो संयम अपनाए।
धरणी भूशण पर्वत जानो, किए ध्यान जाके शुभ मानो॥
पुशपदन्त क्षुल्लक जी आए, गुरुवर का सन्देश सुनाए।
ऋद्धि विक्रिया तुमने पाई, जिसकी अब आवष्यकता आई॥
नगर हस्तिनापुर में जानो, श्री अकम्पनाचार्य जी मानो।
सात सौ मुनियों के संग आए, जहाँ बैठकर ध्यान लगाए॥
राजा पद्म राय कहलाए, मंत्री जिसके चार बताए।
बलि प्रह्लाद बृहस्पति जानो, और नमुचि जिनके हैं मानो॥
उज्जैनी के रहने वाले, मुनि के कारण देश निकाले।
मुनि को देख के जो घबड़ाए, राजा से बरदान मँगाए॥
सात दिनों तक राज चलाए, चारों मंत्री यज्ञ रचाए।
मुनियों पर उपसर्ग कराए, मुनिवर समता भाव जगाए॥
विष्णु कुमार मुनी तब आए, बटुक विप्र का भेष बनाए।

बलि आदिक जो राज्य चलाए, उनसे भिक्षा पाने आए॥
तीन पैद भूमि जो पाए, देने का संकल्प कराए॥
फिर मुनिवर ऋद्धी प्रगटाए, मेरू गिरि तक पग फैलाए॥
दूजा मानुशोत्तर गिरि धरे, मंत्री तव घबड़ाए सारे॥
बलि मंत्री चरणों झुक जाता, पीठ पे अपना पग रखवाता॥
भार सहन बलि ना कर पाया, क्षमादान का षब्द गुँजाया॥
झुके चरण में मंत्री सारे, मुनियों का उपसर्ग निवारे॥
घर-घर में तब उत्सव छाया, मुनियों को आहार कराया॥
श्रावक सारे खुशी मनाये, कर में रक्षा सूत्र बँधए॥
श्रावक षुक्ल पूर्णिमा पाए, रक्षाबन्धन पर्व कहाए॥
वात्सल्य का पर्व मनेगा, युगों-युगों तक अमर रहेगा॥

(घत्ता छन्द)

श्री मुनिवर ज्ञानी, आतम ध्यानी, दृढ़ श्रद्धानी सुखदानी॥
जिनकी शुभ वाणी, शुभ वरदानी, जन जन की है कल्याणी॥

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार मुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

दोहा- विष्णु कुमार मुनीष पद, जो पूजें धर ध्यान।

‘विशद’ सौख्य पाके सभी, पावें मोक्ष निधन॥

॥ इत्याशीर्वादः॥

अकम्पनाचार्यादि सप्तशत ऋषि पूजा

स्थापना

सप्तशतक उपसर्ग जयी ऋषि, जैन जगत में हुए महान।
मोक्षमार्ग के राही अनुपम, करने वाले जग कल्याण॥
विशद साधना करने वाले, स्थिर होकर करते ध्यान।
श्री अकम्पनाचार्य आदि का, करते भाव सहित आह्वान॥

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशत मुनेः! समूह अत्र अवतर-अवतर
संवौशट् आह्वाननम्। ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशत मुनेः! समूह
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशत
मुनेः! समूह अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(तर्ज-सोलहकारण पूजन.....)

श्रद्धा से जल चरण चढ़ाय, त्रय धरा देकर हर्षाया।
श्री ऋषिराज, गुरुवर के पद पूजें आज॥
मुनिवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री ऋषिराज, गुरुवर के पद पूजें आज॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक मुनिवरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय
जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सांसारिक सुख प्राणी पाय, गुरु पूजा शिव सुख दिलवाया।
श्री ऋषिराज, गुरुवर के पद पूजें आज॥
मुनिवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री ऋषिराज, गुरुवर के पद पूजें आज॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक मुनिवरेभ्यो संसार ताप विनाशनाय
चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत श्री जिन चरण चढ़ाय, वह अक्षय पदवी को पाया।
श्री ऋषिराज, गुरुवर के पद पूजें आज॥
मुनिवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन धम, जिनवर के पर विशद प्रणाम॥3॥

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक मुनिवरेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय
अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

विषय वासना है दुखदाय, काम नषाने पुष्प चढ़ाय।
श्री ऋषिराज, गुरुवर के पद पूजें आज॥
मुनिवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन धम, जिनवर के पर विशद प्रणाम॥4॥

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक मुनिवरेभ्यो काम बाण विध्वंशनाय
पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के सारे भोजन खाय, फिर भी तृप्त नहीं हो पाया।
श्री ऋषिराज, गुरुवर के पद पूजें आज॥

मुनिवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन धम, जिनवर के पर विशद प्रणाम॥5॥

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तषतक मुनिवरेभ्यो क्षुध रोग विनाशनाय
नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नमयी शुभ दीप जलाय, मिथ्या तम को पूर्ण नषाय।
श्री ऋषिराज, गुरुवर के पद पूजे आज॥
मुनिवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन धम, जिनवर के पर विशद प्रणाम॥6॥

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तषतक मुनिवरेभ्यो महामोहान्धकार विनाशनाय
दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

षुष्य धूप जिन चरण चढ़ाय, अष्ट कर्म को पूर्ण नषाय।
श्री ऋषिराज, गुरुवर के पद पूजे आज॥
मुनिवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन धम, जिनवर के पर विशद प्रणाम॥7॥

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तषतक मुनिवरेभ्यो अशटकर्म दहनाय धूपं
निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ा रहे फल मुक्ति प्रदाय, कर्म फलों की शक्ति नषाय।
श्री ऋषिराज, गुरुवर के पद पूजे आज॥
मुनिवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन धम, जिनवर के पर विशद प्रणाम॥8॥

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तषतक मुनिवरेभ्यो महामोक्ष फल प्राप्ताय
फलं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय की नौका पाय, पद अनर्घ्य प्राणी प्रगटाय।
श्री ऋषिराज, गुरुवर के पद पूजे आज॥
मुनिवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन धम, जिनवर के पर विशद प्रणाम॥9॥

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तषतक मुनिवरेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- दर्पण सम प्रभु ज्ञान में, झलके लोकालोक।
शांती धरा दे रहे, मिटे रोग या शोक॥
॥शान्तये शांतिधारा॥

दोहा- गुणानन्त पर्याय को, जाने श्री भगवान।
पुष्पांजलि करते, चरण पाने शिव सोपान॥
॥पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

जयमाला

दोहा- श्री अकम्पनाचार्य जी, आदिक ऋषी महान।
सहन किए उपसर्ग जो, करते हम गुणगान॥

शम्भू छन्द

मोक्षमार्ग के राही बनने, पाया जिनने सद् श्रद्धान।
यथातथ्य वस्तु स्वरूप को जाना पाके सम्यक्ज्ञान॥
पंचपाप से विरहित चर्या, कहलाए सम्यक् चारित्र।
इस प्रकार रत्नत्रय पावन, धरा आपने परम पवित्र॥1॥
पंच महाव्रत समिति इन्द्रिय, पंच के होके जयकारी।
षट आवष्यक पालन करने वाले पावन अनगारी॥
केषलुंच एकाघन स्थित, भोजन करते क्षिति षयन।
मंजन नन्दध्वन चेल से विरहित, ईर्यापथ से करें गमन॥2॥
विषयाषा को तजने वाले, हैं आरम्भ परिग्रह हीन।
ज्ञान ध्यान तप में रत रहकर, रहते हैं निज आतमलीन॥
ऐसे परम तपस्वी साधू, करते हैं निज पर कल्याण।
विशद भाव से करते हैं हम, पावन ऋषियों का गुणगान॥3॥

दोहा- नेता मुक्ती मार्ग के, मुक्ति वधू के कंत।
ऋषिवर अनगारी विशद, अपनाए शिव पंथ॥

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तषतक मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- भाते हैं हम भावना, कभी ना हो उपसर्ग।
भव्य जीव इस लोक में, पावे सब अपवर्ग॥
॥इत्याशीर्वादःपुष्पांजलि क्षिपेत्॥

अर्घ्यावली

(प्रथम वलयः)

सोरठा- ऋषि अकम्पनाचार्य, आदिक मुनिवर सात सौ।
पूजें जिन पद आर्य, जीते हैं उपसर्ग ऋषि॥
॥मण्डलस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपामि॥

चौपाई छन्द

- ऋषि अकम्पनाचार्य कहाए, जो उपसर्ग जयी कहलाए।
जिनकी अर्चा को हम आए, अर्घ्य चढ़ा करके गुणगाए॥1॥
- ॐ हूँ श्री अकम्पनाचार्य महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर श्रुतसागर जी गाये, जो उपसर्ग जयी कहलाए।
जिनकी अर्चा को हम आए, अर्घ्य चढ़ा करके गुणगाए॥2॥
- ॐ हः श्री श्रुतसागर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर पिहितास्रव जी गाये, जो उपसर्ग जयी कहलाए।
जिनकी अर्चा को हम आए, अर्घ्य चढ़ा करके गुणगाए॥3॥
- ॐ हः श्री पिहितास्रव महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर प्रीतिवर्धन जी गाये, जो उपसर्ग जयी कहलाए।
जिनकी अर्चा को हम आए, अर्घ्य चढ़ा करके गुणगाए॥4॥
- ॐ हः श्री प्रीतिवर्धनमुनि महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषि अमितंजय कहाए, जो उपसर्ग जयी कहलाए।
जिनकी अर्चा को हम आए, अर्घ्य चढ़ा करके गुणगाए॥5॥
- ॐ हः श्री अमितंजय महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर अमिततेज जी गाये, जो उपसर्ग जयी कहलाए।
जिनकी अर्चा को हम आए, अर्घ्य चढ़ा करके गुणगाए॥6॥
- ॐ हः श्री अमिततेज महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर अर्ककीर्तये जी गाये, जो उपसर्ग जयी कहलाए।
जिनकी अर्चा को हम आए, अर्घ्य चढ़ा करके गुणगाए॥7॥
- ॐ हः श्री अर्ककीर्तये महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

- ऋषिवर अनन्तवीर्य जी गाये, जो उपसर्ग जयी कहलाए।
जिनकी अर्चा को हम आए, अर्घ्य चढ़ा करके गुणगाए॥8॥
- ॐ हः श्री अनन्तवीर्य महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर कीर्तिधर जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥9॥
- ॐ हः श्री कीर्तिधर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर बज्रबाहु जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥10॥
- ॐ हः श्री बज्रबाहु महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर उदयसुंदर जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥11॥
- ॐ हः श्री उदयसुंदर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर स्वस्तिकनन्दि जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥12॥
- ॐ हः श्री स्वस्तिकनन्दि महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर शुभमति जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥13॥
- ॐ हः श्री शुभमति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर चक्षुष्मान् जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥14॥
- ॐ हः श्री चक्षुष्मान् महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर पृथ्वीभूषण जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥15॥
- ॐ हः श्री पृथ्वीभूषण महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर हिमषीतल जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥16॥
- ॐ हः श्री हिमषीतल महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर श्रीवर्मा जी गाये, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥17॥
- ॐ हः श्री श्रीवर्मा महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि अनरण्यरथ कहलाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥98॥
ॐ हः श्री अनरण्यरथ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर अनन्तरथ गाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥99॥
ॐ हः श्री अनन्तरथ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर अतिभूति कहाए, जो कीर्ति विशद फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥100॥
ॐ हः श्री अतिभूति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

श्री अकम्पनाचार्य आदि सौ, ऋषियों का करके गुणगान।
पूर्ण अर्घ्यं चरणों में जिनके, अर्पित करते यहाँ महान॥
हैं अकम्पनाचार्यादि सप्तऋषिवरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

पूजा कर ऋषिराज की, देते शांतिधार।
पुष्पांजलि करते चरण, नत हो बारंबार॥
॥शान्तये शांतिधारा॥पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

अर्घ्यावली

(द्वितीय वलयः)

द्वितीय वलय के हम यहाँ, चढ़ा रहे हैं अर्घ्य।
पुष्पांजलि करते विशद, पानें सुपद अनर्घ्य॥
॥द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

(छन्द चौपाई)

ऋषिवर अमृतसिंधु कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥101॥
ॐ हः श्री अमृतसिंधु महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर आनंदमाल कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥102॥
ॐ हः श्री आनंदमाल महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर अभिनवकीर्ति कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥103॥
ॐ हः श्री अभिनवकीर्ति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर अभयरुचि कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥104॥
ॐ हः श्री अभयरुचि महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर अतिमुक्तक कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥105॥
ॐ हः श्री अतिमुक्तक महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर कुसुमांजलि कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥106॥
ॐ हः श्री कुसुमांजलि महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर अजातषत्रु कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥107॥
ॐ हः श्री अजातषत्रु महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषी अमरप्रभ आप कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥108॥
ॐ हः श्री अमरप्रभ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर श्री अवरुद्ध कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥109॥
ॐ हः श्री अवरुद्ध महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर अतिबल आप कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥110॥
ॐ हः श्री अतिबल महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर श्री अतिभूति कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥111॥
ॐ हः श्री अतिभूति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

- ऋषिवर वीतशोक कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥192॥
- ॐ हः श्री वीतशोक महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर अभयनन्दि कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥193॥
- ॐ हः श्री अभयनन्दि महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर विष्वनन्दि कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥194॥
- ॐ हः श्री विष्वनन्दि महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषी विचित्ररथ आप कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥195॥
- ॐ हः श्री विचित्ररथ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर श्री प्रियबन्धु कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥196॥
- ॐ हः श्री प्रियबन्धु महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर षालिवाहन कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥197॥
- ॐ हः श्री षालिवाहन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर गुणधर आप कहाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥198॥
- ॐ हः श्री गुणधर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषि स्कन्धगुप्त कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥199॥
- ॐ हः श्री स्कन्धगुप्त महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर देशभूषण कहलाए, ज्ञानामृत की धर बहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीष झुकाते॥200॥
- ॐ हः श्री देशभूषण महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

- अमृतसिंधु आदि ऋषिवर, सौ का हम करते है गुणगान।
अर्चा करके जिनके चरणों, अर्घ्य चढ़ाते महति महान॥
- ॐ हीं द्वितियशत मुनिवरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा
शांतिधारा दे रहे, पुष्पांजलि के साथ।
चरणों में वंदन करे, ऊपर करके हाथ॥
॥शान्त्यै शांतिधारा॥पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

अर्घ्यावली

तृतीय वलयः

दोहा- तृतीय वलय की हम यहाँ, पूजा करते आज।
हुए पूर्व में जो ऋषी, उन पर हमको नाज॥
॥तृतीय वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्॥
(वीर छन्द)

- ऋषि प्रद्योत के चरणों वन्दन, करते हैं हम बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धु से पार॥201॥
- ॐ हः श्री प्रद्योत महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर पुष्पमित्र के चरणों, वन्दन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धु से पार॥202॥
- ॐ हः श्री पुष्पमित्र महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर नरवाहन के चरणों, वन्दन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धु से पार॥203॥
- ॐ हः श्री नरवाहन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर नागसेन के चरणों, वन्दन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धु से पार॥204॥
- ॐ हः श्री नागसेन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर रामसेन के चरणों, वन्दन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धु से पार॥205॥
- ॐ हः श्री रामसेन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर श्री धृतिषेण के चरणों, वन्दन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धु से पार॥206॥
- ॐ हः श्री धृतिषेण महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

- ऋषिवर त्रिलोकभूषण के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धु से पार॥287॥
- ॐ हः श्री त्रिलोकभूषण महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर श्री सुप्रभ के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धु से पार॥288॥
- ॐ हः श्री सुप्रभ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर श्री सुनन्दन चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धु से पार॥289॥
- ॐ हः श्री सुनन्दन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर स्वतंत्रलिंग के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धु से पार॥290॥
- ॐ हः श्री स्वतंत्रलिंग महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर श्री अमितांक के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धु से पार॥291॥
- ॐ हः श्री अमितांक महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर सुधर्ममित्र के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धु से पार॥292॥
- ॐ हः श्री सुधर्ममित्र महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर श्री कपिल के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धु से पार॥293॥
- ॐ हः श्री कविल महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर श्री अचल के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धु से पार॥294॥
- ॐ हः श्री अचल महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर श्री नंदिमित्र के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धु से पार॥295॥
- ॐ हः श्री नंदिमित्र महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर रूपकुम्भ के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धु से पार॥296॥
- ॐ हः श्री रूपकुम्भ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

- ऋषिवर स्वर्णकुम्भ के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धु से पार॥297॥
- ॐ हः श्री स्वर्णकुम्भ महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर षक्रटाल के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धु से पार॥298॥
- ॐ हः श्री षक्रटाल महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर स्वयंबुद्ध के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धु से पार॥299॥
- ॐ हः श्री स्वयंबुद्ध महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर श्री सुव्रत के चरणों, वंदन करते बारम्बार।
अर्घ्य चढ़ाकर अर्चा करते, पाएँ भव सिन्धु से पार॥300॥
- ॐ हः श्री सुव्रत महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

- संयम तप कर ऋद्धिया, पाते जैन ऋशीष।
पुष्पांजलि करते विशद, चरण झुकाते शीष।
॥शान्तये शांतिधारा॥पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

अर्घ्यावली

चतुर्थ वलयः

॥चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

(छन्द का नाम)

- श्री दक्ष हुए पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥301॥
- ॐ हः श्री दक्ष महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री सुरेन्द्रमन्यु पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥302॥
- ॐ हः श्री सुरेन्द्रमन्यु महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री गुणसागर पावन ऋशीष, हम झुका रहे जिन चरण शीष।
उपसर्ग जयी पाए महान, हम अर्घ्य चढ़ाते हैं प्रधन॥303॥
- ॐ हः श्री गुणसागर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बिम्बसार ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
 पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विशाल॥498॥
 ॐ हः श्री बिम्बसार महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 वररूचि ऋषिवर जी हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
 पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विशाल॥499॥
 ॐ हः श्री वररूचि महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 ब्रह्मरूचि ऋषिवर हुए महान, करें हम जिनका भी गुणगान।
 पूज्य इस जग में हुए त्रिकाल, चरण में वन्दन करें विशाल॥500॥
 ॐ हः श्री ब्रह्मरूचि महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप ले साथ।
 अर्चा करते भाव से, झुका चरण में माथा॥5॥
 ॐ ह्रीं पंचशत मुनिवरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्टम् वलयः

अर्घ्यावली

दोहा- पराषर आदिक ऋषी, सहन किए उपसर्ग।
 पुष्पांजलि कर पूजते, पाने हम अपवर्ग॥
 ॥ षष्टम वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्॥
 (चाल छन्द)

ऋषि पाराषर कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
 हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥501॥
 ॐ हः श्री पराषर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 ऋषि भुवनकीर्ति कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
 हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥502॥
 ॐ हः श्री भुवनकीर्ति महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 ऋषिवर मणिभद्र कहाए जो, जगत पूज्यता पाए।
 हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥503॥
 ॐ हः श्री मणिभद्र महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर मधवान कहाए जो, जगत पूज्यता पाए।
 हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥504॥
 ॐ हः श्री मधवान महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 ऋषिराज सुकौषल गाए जो, जगत पूज्यता पाए।
 हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥505॥
 ॐ हः श्री ऋषिराज महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 ऋषि विद्युच्चर कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
 हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥506॥
 ॐ हः श्री विद्युच्चर महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 ऋषिवर दण्डक कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
 हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥507॥
 ॐ हः श्री दण्डक महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 ऋषिवर चाणक कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
 हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥508॥
 ॐ हः श्री चाणक महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 ऋषिवर निःषुम्भु कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
 हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥509॥
 ॐ हः श्री निःषुम्भु महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 ऋषि देवगुरु कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
 हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥510॥
 ॐ हः श्री देवगुरु महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 ऋषि चन्द्रगुप्त कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
 हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥511॥
 ॐ हः श्री चन्द्रगुप्त महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 ऋषि विपुलवाहन कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
 हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥512॥
 ॐ हः श्री विपुलवाहन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 ऋषिवर शुचिदत्त कहाए जो, जगत पूज्यता पाए।
 हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥513॥
 ॐ हः श्री शुचिदत्त महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

- ऋषिवर बोधितबुद्ध कहाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥594॥
- ॐ हः श्री बोधितबुद्ध महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषि ऋषिमन्यु कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥595॥
- ॐ हः श्री ऋषिमन्यु महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषिवर अपवर्ग कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥596॥
- ॐ हः श्री अपवर्ग महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषि भूरिविक्रम कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥597॥
- ॐ हः श्री भूरिविक्रम महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषि सहस्रबल जी कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥598॥
- ॐ हः श्री सहस्रबल महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषि षतबल जी कहलाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥599॥
- ॐ हः श्री षतबल महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋषि ब्रह्मगुलाल कहाए जो, जगत पूज्यता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीष झुकाते॥600॥
- ॐ हः श्री ब्रह्मगुलाल महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

- जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप ले साथ।
अर्चा करते भाव से, झुका चरण में साथ॥6॥
- ॐ ह्रीं षष्टशत मुनिवरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति
- दोहा- भक्ति प्रवण आदिक ऋषी, जग में हुए महान।
पुष्पांजलि करके विशद, करते हम गुणगान॥
॥शान्तये शांतिधारा॥पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

सप्तम् वलयः

अर्घ्यावली

॥ सप्तम वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

(वेसरी छन्द)

- भक्तिप्रवण ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥601॥
- ॐ हः श्री भक्तिप्रवण महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पूतिवाहन ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥602॥
- ॐ हः श्री पूतिवाहन महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पवित्रयष ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥603॥
- ॐ हः श्री पवित्रयष महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रवर्धक ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥604॥
- ॐ हः श्री प्रवर्धक महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अधमर्धक ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥605॥
- ॐ हः श्री अधमर्धक महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
आस्तिक्य ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥606॥
- ॐ हः श्री आस्तिक्य महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
धर्मवररसिक ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥607॥
- ॐ हः श्री धर्मवररसिक महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सहिष्णु ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥608॥
- ॐ हः श्री सहिष्णु महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेयांससागर ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥689॥

ॐ हः श्री श्रेयांससागर महामुनये नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
क्षितिपाल ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥690॥

ॐ हः श्री क्षितिपाल महामुनये नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
योगेन्द्र ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥691॥

ॐ हः श्री योगेन्द्र महामुनये नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
आत्मबोध ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥692॥

ॐ हः श्री आत्मबोध महामुनये नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
महाशय ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥693॥

ॐ हः श्री महाशय महामुनये नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
सर्वहितंकर ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥694॥

ॐ हः श्री सर्वहितंकर महामुनये नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
वासव ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥695॥

ॐ हः श्री वासव महामुनये नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
मल्लिसागर ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥696॥

ॐ हः श्री मल्लिसागर महामुनये नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
व्यतीतशोक ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥697॥

ॐ हः श्री व्यतीतशोक महामुनये नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
निर्वाणसागर ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥698॥

ॐ हः श्री निर्वाणसागर महामुनये नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

निष्कषाय ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥699॥

ॐ हः श्री निष्कषाय महामुनये नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।
यम ऋषिवर जी गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, भक्ति भाव से महिमा गाते॥700॥

ॐ हः श्री यम महामुनये नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप ले साथ।
अर्चा करते भाव से, झुका चरण में माथा॥7॥

ॐ ह्रीं सप्तशत मुनिवरेभ्यो पूर्णार्घ्य निर्वपामीति

जाप्य ॐ ह्रीं अकम्पनाचार्यदिक सप्तशत मुनिवरेभ्यो नमः

समुच्चय जयमाला

दोहा वात्सल्य का पर्व यह, जग में मंगलकार।
गाते हैं जयमालिका, करके जय जयकार॥

(चौबोला छन्द)

उज्जयिनी के नृप श्री वर्मा, के मंत्री थे चार विशेष।
बलि, प्रह्लाद, बृहस्पति, नमुचि, मिथ्यावादी रहे अशेष॥
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, सप्त शतक थे बहुगुणवान।
दर्शन करके नृप श्री वर्मा, प्रमुदित मन में हुआ महान्॥
अशुभ निमित्त जानकर गुरु ने, मौन का दीन्हा था आदेश।
शिरोधार्य करके मुनियों ने, पालन कीन्हा जिसे विशेष॥
श्रुत सागर मुनि सुन न पाए, जो थे ज्ञानी श्रेष्ठ महान्।
चर्या करके लौट रहे थे, मंत्री करते तब अपमान॥
अज्ञानी होते मुनि सारे, जानें क्या तत्त्वों का सार।
सुनकर मुनि मंत्री से बोले, तुम क्यों करते गलत प्रचार॥
वाद-विवाद हुआ मुनिवर से, सारे मंत्री माने हार।
अपमानित होकर रात्रि में, मुनि पर कीन्हे खड्गप्रहार॥

कीलित किया क्षेत्र रक्षक ने, सर्व मंत्रियों को उस हाल।
 राजा ने क्रोधित हो करके, दीन्हा क्षण में देश निकाल।।
 हस्तिनागपुर पहुँचे मंत्री, पद्मराय राजा के पास।
 सर्व मंत्रियों ने मिलकर के, शत्रु दल का किया विनाश।।
 तभी मंत्रियों को मुँह मांगा, राजा ने दीन्हा वरदान।
 जब चाहेंगे ले लेंगे हम, वचन लिए राजा ने मान।।
 श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, करके पहुँचे वहाँ विहार।
 संघ देख मंत्रिन् के मन में, भय का रहा न कोई पार।।
 कुटिल भाव से मंत्री पहुँचे, पद्मराय नृप के दरबार।
 अष्ट दिवस का राज्य दीजिए, मानेंगे हम सब आभार।।
 भीषण आग जलाए मंत्री, यज्ञ रचाए विविध प्रकार।
 दान किमिच्छित देते सबको, कीन्हा चारों ओर प्रचार।।
 धरणी भूषण पर्वत पर मुनि, श्रुतसागर करते थे ध्यान।
 कम्पित देख गगन में तारा, मुनि को आश्चर्य हुआ महान्।।
 मुनियों पर उपसर्ग हुआ है, मुनि को हुआ था ये आभास।।
 श्रेष्ठ विक्रिया ऋद्धि मुनिवर, तप से सिद्ध हुई है खास।
 यह उपसर्ग आपके द्वारा, हो सकता है पूर्ण विनाश।।
 हस्तिनागपुर पहुँचे मुनिवर, वात्सल्य का भाव विचार।
 बटुक विप्र का भेष धारकर, मुनि पहुँचे करने उपकार।।
 बलि आदि मंत्री के आगे, बटुक ने माँगा यह वरदान।
 तीन पैढ़ भूमि दो हमको, तुम हो दानी श्रेष्ठ महान्।।
 वचन बद्ध करके मंत्री को, मुनिवर ने फिर रक्खा पैर।
 दो पग में सब धरती मापी, तीजे की अब रही न खैर।।
 बलि आदि मंत्री झुक जाते, मुनिवर के चरणों में आन।
 हमें क्षमा कर दो हे मुनिवर, हमसे गलति हुई महान्।।
 विष्णु कुमार मुनि की बोले, प्राणी सारे जय-जयकार।
 करके यह उपसर्ग दूर गुरु, कीन्हा है हम पर उपकार।।
 नशते ही उपसर्ग सभी ने, मुनियों को दीन्हा आहार।
 बलि आदि भी मुनि संघ की, भाव सहित बोले जयकार।।
 रक्षासूत्र बाँध हाथों में, सबने कीन्हा यही विचार।
 धर्म की रक्षा कर हमको भी, करना है जग का उपकार।।

साधर्मी से वात्सल्य का, भाव जगायेंगे हम लोग।
 कहीं किसी भी रूप में हमको, मिले धर्म का जब संयोग।।
 श्रावण शुक्ला पूनम का दिन, पर्व बना यह मंगलकार।
 वात्सल्य का है प्रतीक जो, सम्यक् दर्शन का आधार।।
 विष्णु कुमार मुनि ने फिर से, व्रत कीन्हें थे अंगीकार।।
 कर्मों की सेना के ऊपर, कीन्हा मुनिवर ने अधिकार।।
 मुनियों ने कीन्हा तप भारी, निज परिणामों के अनुसार।
 कर्म नाशकर कर स्वर्ग मोक्ष पद, पाये मुनिवर अपरम्पार।।
 धर्म भावना जगे हृदय में, पाप रहे हमसे अतिदूर।
 सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण, से हृदय भरे मेरा भरपूर।।
 रक्षा बन्धन पर्व धर्म की, रक्षा का त्यौहार महान्।
 'विशद' भाव से करते हैं हम, मुनियों का अतिशय गुणगान।
 श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, सप्त शतक के चरण नमन्।
 हैं उपसर्ग निवारक महामुनि, विष्णु कुमार के पद वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक एवं विष्णु कुमार मुनिभ्या जयमाला
 पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा वात्सल्य का पर्व यह, रक्षाबन्धन नाम।
 जिन मुनियों के चरण में, बारम्बार प्रणाम।।

॥इत्याशीर्वादः॥

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन
 गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदिसागराचार्य जातास्तत् शिष्यः
 श्री महावीरकीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या
 जातास्तत् शिष्याः श्री भरतसागराचार्य श्री विरागसागराचार्याः जातास्तत्
 शिष्याः आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे
 भारतदेशे राजस्थान प्रान्तान्तर्ग श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन उस्मानपुर
 दिल्ली मासोत्तम मासे शुभे मासे श्रावण मासे कृष्ण पक्षे एकम
 रविवसरे श्री रक्षाबन्धन विधान रचना समाप्त इति शुभं भूयात्।

रक्षाबन्धन विधान चालीसा

रक्षाबन्धन विधान की आरती

तर्ज भक्ती बेकरार है...

गुरुवर का दरबार है, भक्ती अपरम्पार है।
मुनि अकम्पनाचार्य आदि की, हो रही जय जयकार है।।टेक॥

घृत का दीप जलाकर लाए, श्री मुनिवर के द्वार जी-2
भाव सहित हम गुण गाते हैं, हो जाए उद्धार जी-2
गुरुवर का.....॥1॥

श्री अकम्पनाचार्य आदि शुभ, सप्त शतक मुनिवर ज्ञानी-2
धर्म साधना करने वाले, पावन थे जो कल्याणी-2
गुरुवर का.....॥2॥

नगर हस्तिनापुर में जाके, पावन ध्यान लगाए थे-2
बलि आदिक मंत्री मुनियों से, मन में वैर बनाए थे-2
गुरुवर का.....॥3॥

जिनके ऊपर मंत्री छल से, बहु उपसर्ग कराए थे-2
विष्णु कुमार मुनी ऋद्धी से, वह उपसर्ग नशाए थे-2
गुरुवर का.....॥4॥

तब से चैत शुक्ल पूनम को, यह त्यौहार मनाते हैं-2
रक्षासूत्र बाँध के कर में, वात्सल्य दिखलाते हैं-2
गुरुवर का.....॥5॥

आचार्य श्री विशदसागर जी द्वारा रचित 182 विधानों की विशाल श्रृंखला पर्वों के दिनों में करने योग्य विधान

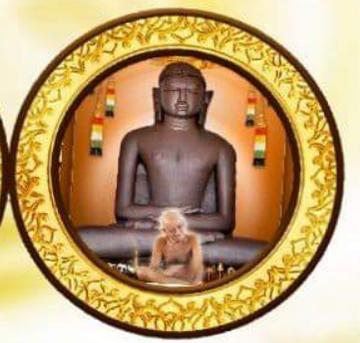
1. श्री आदिनाथ मण्डल विधान	62. सम्यक् आराधना विधान	123. श्री पाश्र्वनाथ विधान (गंभीरा)
2. श्री अजितनाथ मण्डल विधान	63. मुत्तुंजय विधान	124. यागमण्डल विधान (लघु)
3. श्री सम्भवनाथ मण्डल विधान	64. शांति प्रदायक शांति विधान	125. चारित्र शुद्धि विधान (बृहद्)
4. श्री अभिनन्दननाथ मण्डल विधान	65. लघु मुत्तुंजय विधान	126. अष्टादिक विधान (बृहद्)
5. श्री सुमतिनाथ मण्डल विधान	66. जम्बुद्वीप विधान	127. चौबीस तीर्थकर विधान (बृहद्)
6. श्री पद्मप्रभु मण्डल विधान	67. चारित्र शुद्धीव्रत विधान	128. नवदेवता विधान (बृहद्)
7. श्री सुपाश्र्वनाथ विधान	68. क्षायिक नव लब्धी विधान	129. ऋषि मण्डल विधान (बृहद्)
8. श्री चन्द्रप्रभु विधान	69. लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान	130. नवगृहशांति विधान (बृहद्)
9. श्री पुष्पवन्त विधान	70. गोम्पदेश बाहुबली विधान	131. पंच बालयति विधान (बृहद्)
10. श्री शीतलनाथ विधान	71. निर्वाण क्षेत्र विधान	132. तत्त्वार्थ सूत्र विधान (बृहद्)
11. श्री श्रयांसनाथ विधान	72. तत्त्वार्थ सूत्र विधान (लघु)	133. सहस्र नाम विधान (बृहद्)
12. श्री वासुपुत्र्य विधान	73. त्रैलोक्य मण्डल विधान	134. नवीश्वर विधान (बृहद्)
13. श्री विमलनाथ विधान	74. पुण्यास्त्रव विधान	135. महामुत्तुंजय विधान (बृहद्)
14. श्री अनन्तनाथ विधान	75. सप्तऋषि विधान	136. दशलक्षण विधान (बृहद्)
15. श्री धर्मनाथ विधान	76. श्री शांति कुंशु अरहनाथ विधान	137. रत्नत्रय विधान (बृहद्)
16. श्री शांतिनाथ विधान	77. श्रावक व्रत दोष	138. सिद्धचक्र विधान (बृहद्)
17. श्री कुंशुनाथ विधान	78. तीर्थकर पंचकल्याणक तीर्थ विधान	139. अभिनवकल्पतरु विधान (बृहद्)
18. श्री अरहनाथ विधान	79. सम्यक् दर्शन विधान	140. समवशरण विधान (बृहद्)
19. श्री मल्लनाथ विधान	80. श्रुत ज्ञान व्रत विधान	141. इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
20. श्री मुनिस्मृतनाथ विधान	81. चारित्र शुद्धिव्रत विधान (जाप्य)	142. धर्मचक्र विधान (बृहद्)
21. श्री नमिनाथ विधान	82. मनोकामना पूर्णशांति विधान	143. अर्हत महिमा विधान (बृहद्)
22. श्री नेमिनाथ विधान	83. कलिकण्ड पाश्र्वनाथ विधान	144. विदेह क्षेत्र विद्यमान वीस तीर्थकर विधान (बृहद्)
23. श्री पाश्र्वनाथ विधान	84. तीर्थकर पंचकल्याणक तिथि विधान	145. एक सौ सत्तर तीर्थकर विधान (बृहद्)
24. श्री महावीर विधान	85. विजयश्री विधान	146. तीन लोक विधान (बृहद्)
25. पंच परमेष्ठी विधान	86. श्री आदिनाथ विधान (रानीला)	147. सोलहकारण भावना विधान (बृहद्)
26. णामोकार मण्डल विधान	87. श्री शांतिनाथ विधान (सामोद)	148. गणधर वलय विधान (बृहद्)
27. भक्तामर मण्डल विधान	88. श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान	149. चौबीस तीर्थकर निर्वाण भक्ति विधान (बृहद्)
28. सम्मेद शिखर विधान	89. षट् खण्डागम विधान	150. चौबीस तीर्थकर विधान (द्वितीय) (बृहद्)
29. श्रुत स्कंध विधान	90. दिव्य देशना विधान	151. कल्पद्रुम विधान
30. याग मण्डल विधान	91. श्री आदिनाथ विधान (रेवाड़ी)	152. चौसठ ऋद्धि विधान (लघु)
31. पंचकल्याणक विधान	92. नवग्रह शांति विधान	153. (कांचीवारस) श्रावण द्वन्द्वशी विधान
32. त्रिकाल चौबीसी विधान	93. रक्षाबन्धन विधान	154. चूलगिरि विधान
33. कल्याण मंदिर विधान	94. तीर्थकर विधान	155. पंचपरमेष्ठी विधान
34. लघु समवशरण विधान	95. गणधरवलय विधान (लघु)	156. तीस चौबीस विधान
35. सर्वदोष प्रायश्चित्त विधान	96. गिरनार गिरि विधान	157. आकाश पंचमी विधान
36. पंचमेरु विधान	97. श्री चन्द्रप्रभु विधान (तिजारा)	158. पुष्यांजलि विधान
37. लघु नवीश्वर विधान	98. ऋषिमण्डल विधान (द्वितीय)	159. नवनिधि विधान
38. श्री चंवलेश्वर पाश्र्वनाथ विधान	99. कालसर्प दोष निवारक कल्याण मंदिर	160. साप्ताहिक सप्त विधान
39. जिनगुण सम्पत्ति विधान	100. वास्तु विधान (द्वितीय)	161. पत्य विधान
40. एकीभाव स्तोत्र विधान	101. भक्तामर विधान (चोपाई)	162. शांतिभक्ति विधान
41. ऋषिमण्डल विधान	102. पद्मावती विधान	163. आ. श्रीविराग सागर विधान
42. विधापहार स्रोत विधान	103. 96 क्षेत्रफल विधान	164. चैत्य भक्ति विधान
43. बृहद्भक्तामर स्तोत्र विधान	104. बड़े बाबा विधान	165. श्री ऋषभदेव विधान
44. वास्तु मण्डल विधान	105. कल्पद्रुम विधान (लघु)	166. रत्नत्रय विधान
45. लघु नवग्रह शांतिमण्डल विधान	106. केवल्यलक्ष्मी प्राप्ति विधान	167. रक्षाबन्धन विधान
46. सूर्य अरिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभु विधान	107. महावीर समवशरण विधान	168. ऋद्धि सिद्धि विधान
47. चौसठ ऋद्धि विधान	108. चान्दनपुर महावीर विधान	169. भरत केवली विधान
48. कर्मदहन मण्डल विधान	109. श्री शांति विधान (शांतिनाथ खोह)	170. सर्वतोभद्र विधान
49. लघु नवदेवतर विधान	110. श्री पाश्र्वनाथ विधान (खण्डेला)	171. शांतिविधान (सर्वोदयतीर्थ)
50. सहस्रनाम विधान	111. सुगन्ध दशमी विधान	172. आदिनाथ विधान (अष्टापद)
51. चारित्र लब्धी विधान	112. कर्म निर्झरव्रत विधान	173. ऋषभदेव विधान (नजफगढ़)
52. अनन्त व्रतमण्डल विधान	113. निर्दुख सप्तमी व्रत विधान	174. सैतालेश भक्ति विधान
53. कालसर्प योग निवारक विधान	114. रविव्रत पूजा विधान	175. शांति विधान (तिजारा)
54. शनि अरिष्ट निवारक विधान	115. सौभाग्यदशमी व्रत विधान	176. पंचकल्याणक विधान (लघु)
55. आचार्य परमेष्ठी विधान	116. पुरन्दर विधान	177. महावीर पंचकल्याणक विधान
56. सम्मेद शिखरकूट पूजन विधान	117. रोहिणी व्रत विधान	178. श्री योगसार विधान
57. सरस्वती विधान	118. अनन्त वीर्य केवली विधान	179. गणधर वलय विधान (लघु)
58. विशद महाअर्चना विधान	119. मौन एकादशी व्रत विधान	180. देहरा तिजारा चन्द्रप्रभु विधान (लघु)
59. कल्याण मंदिर विधान (बड़ागांव)	120. सुख सम्पत्ति व्रत विधान	181. जम्बू स्वामी विधान
60. अहिच्छत्र पाश्र्वनाथ विधान	121. चन्दन षष्ठीव्रत विधान	182. जैनत्व संस्कार विधान
61. अर्हतनाम विधान	122. श्री पाश्र्वनाथ विधान (निमोला)	

संकलन प्रयास : मुनि श्री विशालसागर जी महाराज



जैन साहित्य एवं मंदिर उपकरण

हमारे यहाँ सभी प्रकार का दिगंबर जैन एवं भारत के सभी प्रमुख धार्मिक संस्थानों का सत साहित्य एवं मंदिर में उपयोग हेतु उपकरण और प्रभावना में बाटने योग्य सामग्री सीमित मूल्य पर उपलब्ध है



(पांडुशिला, सिंघासन, छत्र, चवर, प्रातिहार्य, जाप माला, मंगल कलश, पूजा बर्तन, चंदोवा, तोरण, झारी, शुद्ध चांदी के उपकरण आर्डर पर निर्मित किया जाता है)

नोट:- हमारे यहाँ घरों में उपयोग हेतु साधुओं के उपयोग हेतु अनुष्ठानों में उपयोग हेतु शुद्ध घी भी आर्डर पर उपलब्ध कराया जाता है



SOURABH KUMAR JAIN

9993602663

77229 83010

SOURABHJN1989@GMAIL.COM

जय जिनेंद्र



श्री



शुद्ध घी

देशी गाय का शुद्ध घी

शुद्धता पूर्वक बनाया गया देशी घी

साधु व्रती एवं धार्मिक अनुष्ठानों को ध्यान

संपर्क सूत्र

CONTACT FOR ORDER
CALL AND WHATSAPP

9993602663

7722983010

में रखकर बनाया गया शुद्ध देशी घी

पहले इस्तेमाल करें फिर विश्वास करें

Contact for
order

Call and

whatsapp

9993602663

7722983010

















9993602663





















Ираб
ИРАБ











णमोकार महामंत्र



णमो अरिहंताणं

णमो सिद्धाणं

णमो आयरियाणं

णमो उवज्जायणं

णमो लोए सव्वसाहूण

एसो पंच णमोकारो, सव्व-पावप्पणासणो ॥

मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥













श्री गुरु जी महाराज











5feet



6.5

22/29



18/29

5.5



0.11

0.2

0.3







































































पीतल डिब्बा सेट







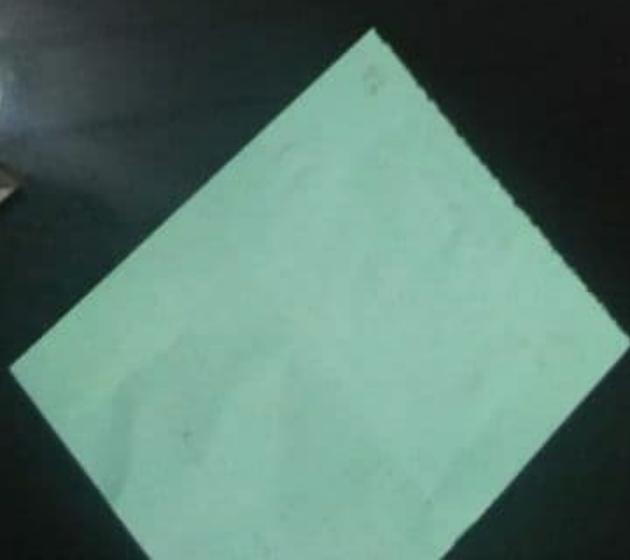
WEIGHT

42040

Essae

DS-852















WEIGHT 0

21565







**दिगंबर जैन ग्रंथो की पीडीएफ
के लिये हमारे whatapp नंबर
पर संपर्क करें**

09993602663

सौरभ सागर (इंदौर)